RNI NO.- CHHHIN/2023/87391

स्वतंत्र छत्तीसगढ़

अंक-09 | वर्ष-3 | माह-दिसम्बर 2025 | प्रकाशन तिथि- दिसम्बर2025 | रायपुर से प्रकाशित | पृष्ठ-40 | मूल्य-11/-

दुर्ग में धान खरीदी ने तोड़ा रिकॉर्ड!

पारदर्शी तुंहर टोकन सिस्टम से किसानों की बढ़ी आय...

छत्तीसगढ़ का आवास मेला 2025 बना नए अवसरों का बड़ा दरवाज़ा...

छत्तीसगढ़
राज्य गीत

अरपा पइरी के धार महानदी हे अपार,
इन्द्राबती ह पखारय तोर पईंया।
महूँ पाँव परँव तोर भुइँया,
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मइया ।।
सोहय बिन्दिया सही घाते डोंगरी, पहार
चन्दा सुरूज बने तोर नयना,
सोनहा धाने के संग, लुगरा के हरियर रंग
तोर बोली जइसे सुघर मइना।
अँचरा तोरे डोलावय पुरवइया ।।
महूँ पाँव परँव तोर भुइँया,
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मइया ।।
रइगढ़ हाबय सुघर तोरे मँउरे मुकुट
सरगुजा (अऊ) बेलासपुर हे बहियाँ,
रइपुर कनिहा सही घाते सुग्घर फभय
दुरुग, बस्तर सोहय पयजनियाँ,
नाँदगाँवे नवा करधनियाँ
महूँ पाँव परंव तोर भुइँया,
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मइया।।

छत्तीसगढ़ महतारी

राज्य गीत अरपा पैरी के धार के रचनाकार
आचार्य डॉ.नरेन्द्र देव वर्मा ने यह गीत सन् 1973 में लिखा था।

स्वतंत्र छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ से प्रकाशित एक सम्पूर्ण पत्रिका

प्रेरणा स्त्रोतः

जी. स्वामी (रायपुर)

प्रधान संपादकः

जी. भूषण राव

समाचार संपादकः

जी.वी.एस. रूक्मणि देवी

उप संपादकः

राखी श्रीवास्तव

सलाहकार संपादकः

अशोक तोमर

मार्केटिंग हेडः

शैलेन्द्र दवे

मार्केटिंग प्रतिनिधिः

हरिमोहन तिवारी

आवरण सज्जाः

Infinity

ब्यूरो हेडः

बिलासपुरः विनीत चौहान

जशपुरः आनंद गुप्ता

कोरियाः प्रवीण निशी

बस्तरः सुनील सिंह राठौर

आफिसः

बी-13, बसंत पार्क

अनमोल सुपर मार्केट के पास

महावीर नगर, न्यू पुरेना रायपुर छ.ग.

ईमेलः swatantrachhattisgarh@gmail.com

वेबसाईटः www.swatantrachhattisgarh.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक

जी. भूषण राव द्वारा सागर प्रिंटर्स, पुरानी बस्ती रायपुर द्वारा मुद्रित एवं बी-13, बसंत पार्क, अनमोल सुपर मार्केट के पास, महावीर नगर, न्यू पुरेना, रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित

मो.:- 99934-54909

संपादकः जी. भूषण राव

पत्रिका में प्रकाशित लेख, लेखकों के अपने विचार है, किसी भी विवाद की स्थिति में सुनवाई का क्षेत्र रायपुर होगा।

वार्षिक सदस्यता शुल्क सभी (विशेषांकों सहित प्रस्तावित) 132/-रू.मात्र

Pg 3

छत्तीसगढ़ का आवास मेला 2025 बना नए अवसरों का बड़ा दरवाज़ा...

Pg 8

दुर्ग में धान खरीदी ने तोड़ा रिकॉर्ड! पारदर्शी तुंहर टोकन सिस्टम से किसानों की बढ़ी आय...

Pg 11

छत्तीसगढ़ में पर्यटन को बढ़ावा देने राज्य सरकार की बड़ी पहल- अब मिलेगा 75 तक सब्सिडी...

Pg 14

नागरिकों की सुविधा और सुरक्षा के लिए पासपोर्ट सत्यापन रिकॉर्ड अब डिजिलॉकर पर उपलब्ध

Pg 20

इंडिगो फ्लाइट रद्द संकट- व्यवस्था, जनता और शासन– तीनों के लिए एक कठोर संकेत...

काम आसान हुआ, पर सीमाएँ धुंधली क्यों?

केरल का रास्ता बाकी राज्यों के लिए सबक ...

इन्टरनेट ने काम को गति दी है, सूचनाएँ पलक झपकते मिल जाती हैं और फाइलें सेकंडों में आगे बढ़ जाती हैं। लेकिन इस सुविधा की एक छिपी हुई कीमत भी है–दफ्तर अब दीवारों के भीतर सीमित नहीं रहा। लैपटॉप, मोबाइल और इंटरनेट की मौजूदगी ने काम को घर तक पहुँचा दिया है। कर्मचारी हर समय उपलब्ध रहने के अनकहे दबाव में जीते हैं, जिससे उनके व्यक्तिगत जीवन, मानसिक शांति और पारिवारिक समय पर लगातार चोट पड़ती है। यही वह पृष्ठभूमि है जिसमें केरल सरकार द्वारा पेश किया गया राइट टू डिसकनेक्ट बिल अत्यंत स्वागतयोग्य कदम बन जाता है।

केरल का प्रस्ताव इस विचार पर आधारित है कि कर्मचारी काम खत्म होने के बाद जवाब देने के लिए बाध्य नहीं होंगे। यह कदम न केवल श्रमिक अधिकारों को मजबूत करता है, बल्कि यह भी मान्यता देता है कि अच्छी उत्पादकता तभी संभव है जब व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ और संतुलित हो। यह बदलाव भारत के अन्य राज्यों के लिए भी एक आदर्श की तरह है, परंतु साथ ही यह चेतावनी भी देता है कि नीति बनाते समय किन बातों से बचना चाहिए।

सबसे पहली गलती जो अन्य राज्यों को नहीं करनी चाहिए, वह है केवल प्रतीकात्मक कानून बनाना। यदि नियमों में स्पष्टता नहीं होगी–जैसे 'कार्य-समय' की सटीक परिभाषा, आपात स्थितियों की सीमाएँ, और उल्लंघन पर दंड की रूपरेखा–तो यह कानून सिर्फ कागज़ पर रह जाएगा। दूसरी बड़ी भूल होगा निजी क्षेत्र की अनदेखी करना। यदि कानून केवल सरकारी कर्मचारियों के लिए प्रभावी होगा, तो बहुसंख्यक कार्यबल इससे बाहर रह जाएगा और नीति का प्रभाव आधा रह जाएगा। तीसरी बात, किसी भी राज्य को यह नहीं भूलना चाहिए कि तकनीक का उद्देश्य सुविधा है, नियंत्रण नहीं; इसलिए नीति ऐसी होनी चाहिए जो कंपनियों को सहयोग की ओर प्रेरित करे, विरोध की ओर नहीं।

केरल ने दिशा दिखाई है–अब बाकी राज्यों को यह ध्यान रखना होगा कि डिसकनेक्ट का अधिकार वास्तव में कर्मचारियों को जोड़ने की ताकत बने, न कि सिर्फ एक अधूरा प्रयास।

आपका अपना
भूषण राव

छत्तीसगढ़ का आवास मेला 2025 बना नए अवसरों का बड़ा दरवाज़ा...

तीन दिवसीय राज्य स्तरीय आवास मेला 2025 छत्तीसगढ़वासियों के लिए किसी उत्सव से कम नहीं रहा। केवल 1त्न बुकिंग ऑफर, तत्काल बैंक ऋ्रण और 879 आवासों की ऑन-द-स्पॉट बुकिंग ने इसे रिकॉर्डङ्कब्रेकिंग आयोजन बना दिया। राज्य सरकार की नई आवास नीति से भी लोगों में विश्वास बढ़ा है।

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राज्य स्तरीय आवास मेला 2025 नागरिकों के लिए एक ऐसा उत्सव बनकर उभरा, जिसने हजारों परिवारों को अपने घर के सपने के बेहद करीब पहुँचा दिया। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने मेले का शुभारंभ करते हुए कहा कि राज्यभर की विभिन्न आवासीय परियोजनाओं को एक ही स्थान पर उपलब्ध कराना हाउसिंग बोर्ड का ऐतिहासिक कदम है। वहीं, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने इसे मुख्यमंत्री की ऐतिहासिक पहल बताते हुए कहा कि भविष्य में उन्हें आवास वाले बाबा के नाम से जाना जाएगा।

आवास एवं पर्यावरण मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी ने बताया कि शासन की नई नीतियों के कारण हाउसिंग बोर्ड ने सिर्फ एक वर्ष में 700 करोड़ रुपये की बिक्री की है, जो पिछले पाँच वर्षों की तुलना में कई गुना अधिक है। नई नीति में यह प्रावधान किया गया है कि प्रोजेक्ट तभी शुरू होगा जब तीन माह में 10त्न बुकिंग या 60त्न एकमुश्त बुकिंग प्राप्त हो।

मेले का आकर्षण पहले दिन से ही चरम पर रहा। 1त्न राशि पर बुकिंग, मौके पर बैंक लोन उपलब्धता और प्रतिदिन के लकी ड्रॉ ने खरीदारों का उत्साह बढ़ा दिया। रायगढ़, कोरबा, जशपुर, कांकेर, दंतेवाड़ा और जगदलपुर के प्रोजेक्ट्स के साथङ्कसाथ रायपुर और नवा रायपुर के कबीर नगर, भुरकोनी, बोरियाकला, सेजबहार और अटल नगर सेक्टर-12 फेस-2 परियोजनाओं में भारी बुकिंग दर्ज की गई।

तीन दिनों में कुल 188 करोड़ रुपये के 879 आवासों की ऑन-द-स्पॉट बुकिंग हुई, जो हाउसिंग बोर्ड के इतिहास की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक मानी जा रही है। समापन समारोह में मुख्य अतिथि कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम ने इस प्रयास को नागरिकों के सपनों को साकार करने वाली पहल बताया।

मंडल अध्यक्ष श्री अनुराग सिंह देव ने बताया कि 2060 करोड़ रुपये की नई परियोजनाएँ राज्य के आवास विकास को नई दिशा देंगी। उन्होंने यह भी घोषणा की कि गोंडवाना राष्ट्रीय आजीविका एवं सांस्कृतिक कला महोत्सव 2025 में 14 दिसंबर तक हाउसिंग बोर्ड का विशेष स्टॉल संचालित रहेगा, जहाँ लोग आवासों की जानकारी और बुकिंग कर सकेंगे। बढ़ती मांग को देखते हुए 1त्न बुकिंग ऑफर की तिथि 30 नवंबर तक बढ़ा दी गई है।

हाउसिंग बोर्ड आयुक्त श्री अवनीश कुमार शरण ने बताया कि आवंटी पोर्टल और चैटबॉट सेवाओं से आवास आवंटन प्रक्रिया को और पारदर्शी और सरल बनाया जाएगा। उनके अनुसार, आने वाले तीन वर्षों में 26 जिलों में 55 नई परियोजनाएँ गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरी की जाएंगी।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने भी मेले की रौनक बढ़ाई। इंडियन रोलर बैंड, सुनील तिवारी, आरू साहू और खैरागढ़ विश्वविद्यालय के छात्रों की प्रस्तुति ने दर्शकों को खूब आनंदित किया। टीवी, फ्रिज, बाइक और कार जैसे बंपर लकी ड्रॉ पुरस्कारों ने मेले को और भी यादगार बना दिया।

छत्तीसगढ़ राजभवन का नाम अब 'लोकभवन'- देशभर में सरकारी संस्थानों के नाम बदलने की बड़ी पहल...

छत्तीसगढ़ राजभवन अब 'लोकभवन' कहलाएगा। केंद्र सरकार की नई पहल के तहत देशभर के राजभवनों के नाम बदले जा रहे हैं। इसके साथ ही प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) का नाम भी बदलकर 'सेवा तीर्थ' कर दिया गया है। यह बदलाव सिर्फ प्रशासनिक नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का संकेत माना जा रहा है।

'राजभवन' से 'लोकभवन'- शासन को अधिक जनकेंद्रित बनाने की पहल

रायपुर में बड़ा प्रशासनिक बदलाव सामने आया है। गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी पत्र के अनुरूप छत्तीसगढ़ राजभवन का नाम अब 'लोकभवन' कर दिया गया है। राज्यपाल के सचिव डॉ. सी.आर. प्रसन्ना ने उसकी अधिसूचना जारी करते हुए बताया कि वर्ष 2024 में आयोजित राज्यपाल सम्मेलन में सभी राजभवनों के नाम बदलने का सुझाव दिया गया था, ताकि इन संस्थानों को अधिक जन-केंद्रित स्वरूप दिया जा सके। अब से सरकारी दस्तावेजों और सभी शासकीय उपयोग में 'लोकभवन' नाम लागू होगा। अधिकारियों का कहना है कि यह परिवर्तन प्रशासन को जनता के और करीब लाने की दिशा में एक प्रतीकात्मक कदम है।

प्रधानमंत्री कार्यालय का नाम भी बदला-अब 'सेवा तीर्थ'

इस बड़े बदलाव के तहत केवल राजभवन ही नहीं बल्कि प्रधानमंत्री कार्यालय (क्स्ह) का नाम भी बदलकर 'सेवा तीर्थ' कर दिया गया है। पीएमओ की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि भारत के सभी पब्लिक इंस्टीट्यूशंस में एक व्यापक सुधार अभियान चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य 'गवर्नेंस आइडिया' को नए रूप में प्रस्तुत करना और सेवा, जिम्मेदारी तथा नैतिकता को सशक्त बनाना है। बताया गया कि पिछले 78 वर्षों से साउथ ब्लॉक में स्थित पीएमओ को अब आधुनिक सुविधाओं से लैस नए कैंपस में स्थानांतरित किया जाएगा। एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, नाम का बदलाव प्राधिकरण नहीं, सेवा की भावना को आगे रखने की दिशा में है।

पहले भी हुए नाम परिवर्तन-कर्तव्य पथ और लोक कल्याण मार्ग उदाहरण

इससे पहले भी केंद्र सरकार राष्ट्रीय प्रतीकों और महत्वपूर्ण स्थानों के नाम बदलने की पहल करती रही है। वर्ष 2022 में ऐतिहासिक 'राजपथ' का नाम बदलकर 'कर्तव्य पथ' किया गया, जिसका उद्देश्य सत्ता और शक्ति के प्रतीक को जिम्मेदारी और सेवा की भावना से जोड़ना था। इसी तरह प्रधानमंत्री के आधिकारिक निवास का पता, जिसे पहले 'रेस कोर्स रोड' कहा जाता था, वर्ष 2016 में 'लोक कल्याण मार्ग' कर दिया गया था। विशेषज्ञों का मानना है कि अब 'लोकभवन' और 'सेवा तीर्थ' के नामकरण से सरकार एक बार फिर जन-केंद्रित प्रशासनिक दर्शन को आगे बढ़ा रही है।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में हुई राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड की 33वीं बैठक

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में कृषि भवन, नई दिल्ली में राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के निदेशक मंडल की 33वीं बैठक आयोजित हुई। बैठक में केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री रामनाथ ठाकुर भी उपस्थित थे।

फ्लैगशिप कार्यक्रमों की समीक्षा और रणनीति निर्धारण- बैठक में श्री शिवराज सिंह चौहान ने NHB की योजनाओं की समीक्षा की। विशेष रूप से वाणिज्यिक बागवानी विकास योजनाएं, कोल्ड-चेन अवसंरचना परियोजनाएं, क्लस्टर विकास कार्यक्रम- क्षेत्र-विशिष्ट बागवानी क्लस्टरों के माध्यम से उत्पादकता और बाजार जुड़ाव को बढ़ाने की नई पहल, क्लीन प्लांट कार्यक्रम-उच्च मूल्य वाली फसलों के लिए रोग-मुक्त पौध सामग्री उपलब्ध कराने के बारे में चर्चा हुई।

- योजनाओं का क्रियान्वयन समयबद्ध, पारदर्शी और किसान-केंद्रित हो- केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह
- छोटे किसानों को मिलें ज्यादा से ज्यादा लाभ, उनकी आय भी बढ़े- शिवराज सिंह
- बागवानी उत्पाद जल्दी खराब होने से बचाने के लिए रणनीति बनाएं, ताकि सेल्फ लाइफ बढ़े- शिवराजसिंह
- किसानों को नुकसान नहीं हो; अवेयरनेस प्रोग्राम चलाएं -शिवराज सिंह

केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने निर्देश दिया कि योजनाओं का क्रियान्वयन समयबद्ध, पारदर्शी और किसान-केंद्रित हो तथा किसानों को सब्सिडी भी समय पर दी जाएं, इस संबंध में कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए। साथ ही, श्री शिवराज सिंह ने किसानों के हित में, जल्दी खराब होने वाले बागवानी उत्पादों के संबंध में विशेष रणनीति बनाने पर जोर दिया, ताकि इनकी सेल्फ लाइफ बढ़े, किसानों को नुकसान नहीं हो और नुकसान से बचने के लिए अवेयरनेस प्रोग्राम भी चलाए जाएं।

एनएचबी की भूमिका सुदृढ़ करने के लिए मार्गदर्शन- बैठक के दौरान केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने बागवानी क्षेत्र की उत्पादकता, गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने हेतु कई रणनीतिक सुझाव दिए। उन्होंने गुणवत्तापूर्ण पौध सामग्री, फसलोत्तर प्रबंधन, उत्पादकता वृद्धि पर विशेष ध्यान देने को कहा। श्री शिवराज सिंह ने कहा कि पूरे समन्वय के साथ किसानों को बाजार, कोल्ड-चेन नेटवर्क और मूल्य संवर्धन के अवसरों से जोड़ने वाली व्यवस्था को सुदृढ़ करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसानों के फायदे के लिए एनएचबी राज्यवार, क्षेत्रवार रोडमैप बनाकर पूरी ताकत से श्रेष्ठ कार्य करें।

तकनीकी प्रकाशनों का विमोचन- केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड द्वारा तैयार गुड एग्रीकल्चर प्रैक्टिस, जैविक खेती मॉडल और उन्नत बागवानी तकनीकों पर आधारित तकनीकी प्रकाशनों का विमोचन किया। ये संसाधन किसानों, उद्यमियों व कृषि विशेषज्ञों के लिए एक उपयोगी संदर्भ सामग्री सिद्ध होंगे। बैठक में केंद्रीय कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी, आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. मांगीलाल जाट सहित कृषि, विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी, बागवानी उद्योग से जुड़े गैर-आधिकारिक सदस्य उपस्थित रहे। इस व्यापक प्रतिनिधित्व से बैठक में क्षेत्रीय दृष्टिकोण व सहभागी संवाद को बल मिला। राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन है, जो देशभर में वाणिज्यिक बागवानी और कोल्ड-चेन अवसंरचना के सुदृढ़ विकास के लिए कार्यरत है।

अगहन जात्रा

365 गांवों की आस्था और परंपरा का जीवंत प्रमाण...

दंतेवाड़ा-बस्तर की आराध्य देवी मां दंतेश्वरी की बहन, मां शीतला माता के प्राचीन मंदिर में आयोजित अगहन जात्रा में हजारों श्रद्धालु शामिल हुए। नए धान के चावल का भोग, पारंपरिक पूजा और बलि की प्राचीन परंपरा ने श्रद्धालुओं का उत्साह और आस्था दर्शाई।

दंतेश्वरी सरोवर में अगहन जात्रा का भव्य आयोजन, 365 गांवों की आस्था समेटी

दंतेवाड़ा-बस्तर के प्राचीन दंतेश्वरी सरोवर के समीप मां शीतला माता के मंदिर में आयोजित वार्षिक अगहन जात्रा का आयोजन बड़ी श्रद्धा और भव्यता के साथ संपन्न हुआ। माटी पूजा के नाम से भी प्रसिद्ध यह उत्सव बस्तर संभाग में मेला-मड़ई की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। दूर-दराज के गांवों से हजारों श्रद्धालु सुबह होते ही मंदिर पहुंचे और माता के दर्शन के लिए कतारबद्ध होकर लंबी लाइनों में प्रतीक्षा की। भक्तों ने सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और परिवार की मंगलकामना करते हुए कंदफूल, धान, नारियल, फल और अन्य भेंटें अर्पित की।

अगहन जात्रा की प्रारंभिक पूजा मध्यदेश्वरी मंदिर में विधिवत संपन्न हुई, जिसमें मंदिर के पुजारी, 12 लंकवार, सेवादार, माझी-चालकी और गांवों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। पूजा के बाद ढोल-मांदर, तुरी, मौहरी और पारंपरिक बांसुरी की धुनों के साथ माता का जुलूस मंदिर तक निकाला गया। नवां भोग यानी नए धान से बने चावल का भोग माता को अर्पित किया गया। श्रद्धालु अपने गांव से फसल का पहला हिस्सा और फसल से बने भोग लेकर आते हैं। परंपरा के अनुसार दोपहर 3 बजे जानवरों की बलि दी जाती है, जिसे आदिकाल से चली आ रही आस्था और कृतज्ञता का प्रतीक माना जाता है।

अगहन जात्रा केवल धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक मिलन का भी अवसर है। 84 परगना के लोग इसे सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं, जिससे क्षेत्रीय एकता का संदेश मिलता है। साथ ही, मेला-मड़ई का शुभारंभ भी इसी अवसर पर होता है, जिसमें दूर-दराज के व्यापारी खाद्य सामग्री, खिलौने, पूजा सामग्री, पारंपरिक वस्त्र और स्थानीय कला उत्पादों की दुकानें लगाते हैं। ग्रामीण, बच्चे और युवा सभी उत्सव का आनंद लेते हैं, और पूरे वातावरण में उल्लास और श्रद्धा का माहौल दिखाई देता है।

ग्रामीण खाद्य आपूर्ति-श्रृंखला संबंधी इन्फ्रास्ट्रक्चर का सुदृढ़ीकरण

ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिक खाद्य आपूर्ति-श्रृंखला इन्फ्रास्ट्रक्चर का समर्थन, खेत से थाली तक खाद्य आपूर्ति श्रृंखलाओं का विकास

खाद्य आपूर्ति-श्रृंखला संबंधी इन्फ्रास्ट्रक्चर में कमियों को दूर करने और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय अपनी दो केंद्रीय योजनाओं, अर्थात् प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना (पीएमकेएसवाई) और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन योजना (पीएलआईएसएफपीआई) के माध्यम से संबंधित इन्फ्रास्ट्रक्चर की स्थापना/विस्तार को प्रोत्साहित कर रहा है। मंत्रालय एक केंद्र प्रायोजित योजना, अर्थात् प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों का औपचारिकीकरण (पीएमएफएमई) योजना, का भी कार्यान्वयन कर रहा है।

इन योजनाओं का उद्देश्य खेत से लेकर खुदरा दुकानों तक कुशल आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के साथ आधुनिक बुनियादी ढांचे का निर्माण करना है, जिसमें भंडारण, परिवहन, मूल्य संवर्धन आदि शामिल हैं, जिससे किसानों को बेहतर लाभ मिल सके, कृषि उपज की बर्बादी कम हो, कटाई के बाद होने वाले नुकसान में कमी आए, उत्पादकता बढ़े और प्रसंस्करण स्तर में वृद्धि हो।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की योजनाएं मांग-आधारित हैं और इन योजनाओं के अंतर्गत स्वीकृत अधिकांश परियोजनाएं ग्रामीण क्षेत्रों में हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक निवेश को बढ़ावा मिलता है और इन इन्फ्रास्ट्रक्चर संबंधी कमियों को दूर किया जा सकता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय स्वयं खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां स्थापित नहीं करता है। हालांकि, यह संबंधित योजना दिशानिर्देशों के अनुसार, अपनी योजनाओं के माध्यम से पात्र उद्यमियों को संबंधित इन्फ्रास्ट्रक्चर स्थापित करने के लिए अनुदान के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

इन तीन योजनाओं के लिए कुल स्वीकृत परिव्यय निम्नानुसार है

योजना का नाम	कार्यान्वयन अवधि	कुल परिव्यय (करोड़ रुपये में)
पीएमकेएसवाई	2021-2026	6520
पीएलआईएसएफपीआई	2021-2027	10900
पीएमएफएमई	2020-2026	10000

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री श्री रवनीत सिंह ने लोकसभा में एक लिखित उत्तर में यह जानकारी दी।

दुर्ग में धान खरीदी ने तोड़ा रिकॉर्ड! पारदर्शी तुंहर टोकन सिस्टम से किसानों की बढ़ी आय...

दुर्ग जिले में अब तक 78,707.80 मीट्रिक टन धान की खरीदी

14,879 किसानों ने समर्थन मूल्य पर बेचा अपना धान

तुंहर टोकन सिस्टम से खत्म हुई लंबी कतारें, भुगतान समय पर

मंत्री गजेन्द्र यादव ने किया बिरेझर उपार्जन केंद्र का निरीक्षण

किसानों ने कहा–व्यवस्था बेहतर, बेचने में नहीं हो रही कोई दिक्कत

दुर्ग जिले में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी तेजी से जारी

दुर्ग जिले में इस वर्ष धान खरीदी ने नया कीर्तिमान स्थापित किया है। जिले की 87 सहकारी समितियों के 102 उपार्जन केंद्रों में अब तक कुल 14,879 किसानों से 78,707.80 मीट्रिक टन धान खरीदा जा चुका है। शासन की पारदर्शी व्यवस्था और तुंहर टोकन प्रणाली ने इस बार किसानों के लिए खरीदी प्रि या को और अधिक सहज और सुगम बना दिया है। किसान निर्धारित तिथि पर सीधे केंद्रों में पहुंचकर धान बि ी कर रहे हैं, जिससे खरीदी प्रि या बिना किसी अव्यवस्था के लगातार तेज गति से आगे बढ़ रही है।

तुंहर टोकन प्रणाली से किसानों को मिली बड़ी राहतऑनलाइन टोकन ने खत्म की लंबी लाइनें

प्रदेश के स्कूल शिक्षा, ग्रामोद्योग, विधि एवं विधायी मंत्री श्री गजेन्द्र यादव ने आज दुर्ग जिले के बिरेझर उपार्जन केंद्र में पहुंचकर खरीदी व्यवस्था का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने किसानों से सीधी बातचीत कर उनकी समस्याओं और आवश्यकताओं को जाना।

किसानों ने बताया कि तुंहर टोकन की ऑनलाइन व्यवस्था के कारण अब उन्हें खरीदी केंद्रों में लंबी कतारों में खड़ा नहीं होना पड़ता। निर्धारित दिनांक पर टोकन के अनुसार पहुंचने से न समय की बर्बादी होती है और न ही भीड़ का दबाव बनता है।

मंत्री यादव ने किसानों को बताया कि राज्य सरकार ने खरीदी प्रक्रिया में पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित की है। उन्होंने कहा कि किसानों के खाते में भुगतान भी निर्धारित समय सीमा के भीतर किया जा रहा है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सकारात्मक बदलाव देखने को मिला है।

खरीदी केंद्रों में बेहतर सुविधाएँ–किसानों ने दी सकारात्मक प्रतिक्रिया

प्रशासन की व्यवस्था पर किसानों ने जताया भरोसा

खरीदी केंद्रों में पहुंचने वाले किसानों ने मंत्री को बताया कि जिला प्रशासन द्वारा—

- पर्याप्त बारदाना उपलब्धता,
- सटीक इलेक्ट्रॉनिक तौल,
- पेयजल और विश्राम व्यवस्था,
- और टोकन प्रणाली जैसी जरूरतें

पूरी तरह उपलब्ध कराई जा रही हैं।

किसानों ने कहा कि निर्धारित तिथि पर वे आसानी से अपना धान बेच पा रहे हैं और किसी भी प्रकार की दिक्कत नहीं आती। एक किसान ने बातचीत में कहा—इस बार खरीदी केंद्रों में व्यवस्था बहुत सुधरी है। तौल से लेकर भुगतान तक सब कुछ सही समय पर हो रहा है।

मंत्री श्री यादव ने आश्वासन दिया कि भविष्य में भी किसानों के हितों को प्राथमिकता देते हुए और बेहतर सुविधाएं लागू की जाएंगी।

निरीक्षण के दौरान उन्होंने संबंधित समिति प्रबंधक को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए।

पारदर्शी व्यवस्था से मजबूत किसान, मजबूत ग्रामीण अर्थव्यवस्था

दुर्ग जिले की धान खरीदी व्यवस्था इस बार प्रशासनिक पारदर्शिता और तकनीकी सुविधा का उत्तम उदाहरण बनकर सामने आई है। तुंहर टोकन जैसी योजनाओं ने किसानों को समय, सुविधा और आर्थिक सुरक्षा—तीनों प्रदान किए हैं। तेजी से चल रही खरीदी ने न केवल किसानों का भरोसा बढ़ाया है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भी नई ऊर्जा भर दी है।

अस्थमा क्यों बढ़ता है सर्दियों में? जानें इसके कारण, लक्षण और इलाज...

ठंडी और सूखी हवा अस्थमा को अचानक ट्रिगर कर सकती है। ऐसे मौसम में सांस फूलना, घरघराहट और छाती में जकड़न जैसी समस्याएँ बढ़ जाती हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि सर्दियों में इनडोर एलर्जी और वायरल इंफेक्शन भी अस्थमा अटैक की संभावना को कई गुना बढ़ा देते हैं।

अस्थमा क्या है और सर्दियों में क्यों बढ़ जाता है?

अस्थमा एक क्रोनिक रेस्पिरेटरी डिज़ीज़ है जिसमें सांस की नलियों में सूजन और सिकुड़न हो जाती है, जिससे सांस लेना मुश्किल हो जाता है। ठंडी और सूखी हवा वायुमार्ग को संकरा करती है, इसी कारण सर्दियों में अस्थमा के लक्षण तेजी से बढ़ते हैं। बच्चों और टीनएजर्स में यह समस्या ज्यादा देखी जाती है। डॉक्टर बताते हैं कि सर्दियों में घर के अंदर मौजूद धूल, फफूंदी, पालतू जानवरों के डैंडर और बार-बार होने वाले वायरल इंफेक्शन (जैसे सर्दी-जुकाम, फ्लू) अस्थमा को और खराब कर देते हैं। इसी कारण विंटर अस्थमा इस सीज़न में आम हो जाता है।

अस्थमा और अस्थमा अटैक के मुख्य लक्षण

अस्थमा के लक्षण व्यक्ति-व्यक्ति में अलग होते हैं, लेकिन आमतौर पर सांस लेने में दिक्कत, घरघराहट, सीने में जकड़न और लगातार खांसी देखी जाती है। रात के समय, सुबह जल्दी या एक्सरसाइज के बाद लक्षण ज़्यादा उभरते हैं। नेशनल हार्ट लंग एंड ब्लड इंस्टीट्यूट (NHLBI) के अनुसार अस्थमा अटैक के दौरान ऐसा महसूस होता है मानो हवा स्ट्रॉ की तरह एक पतली नली से निकल रही हो। गंभीर अटैक में होंठ नीले पड़ना, बोलने में दिक्कत, रिलीवर दवा का असर ना करना, अत्यधिक थकान और सोने में परेशानी जैसे संकेत दिख सकते हैं। विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि हल्के लक्षण वाले मरीजों को भी अचानक गंभीर अस्थमा अटैक आ सकता है।

अस्थमा के कारण और इससे बचाव कैसे करें?

अस्थमा का संबंध जेनेटिक और एनवायरनमेंटल दोनों फैक्टर्स से है। धुआं, प्रदूषण, स्मोकिंग, तेजी से बदलते मौसम, पालतू जानवरों के एलर्जन, धूल-मिट्टी और कम एक्सरसाइज जैसे कारण इसकी मुख्य वजह माने जाते हैं। कुछ पेशे, जैसे खेती, हेयरड्रैसिंग और फैक्ट्री वर्क में उपयोग होने वाले केमिकल्स भी जोखिम बढ़ाते हैं। अस्थमा से बचने के लिए डॉक्टर धूल और फफूंदी से दूरी, स्मोकिंग बंद करने, इनडोर वेंटिलेशन बेहतर रखने, फ्लू का टीका लगवाने और हेल्दी वजन बनाए रखने की सलाह देते हैं। विशेषज्ञ बताते हैं कि मानसिक तनाव भी अस्थमा ट्रिगर कर सकता है, इसलिए तनाव प्रबंधन और नियमित व्यायाम बेहद जरूरी है।

(डिस्क्लेमर- यह जानकारी केवल जागरूकता के लिए है। किसी भी इलाज या सलाह के लिए अपने डॉक्टर से परामर्श करें।)

क्या आपकी किडनी भी खतरे में है? जानिए किडनी स्टोन बनने के कारण, लक्षण और बचाव के तरीके...

क्या है किडनी स्टोन?

किडनी के अंदर जब कैल्शियम, ऑक्सलेट या यूरिक एसिड जैसे मिनरल्स आपस में मिलकर ठोस क्रिस्टल बना लेते हैं, तो इसे किडनी स्टोन (गुर्दे की पथरी) कहा जाता है। शुरू में ये कण छोटे होते हैं, लेकिन समय के साथ यह बड़े पत्थर जैसे टुकड़ों में बदल जाते हैं। जब ये यूरिन नली में फंस जाते हैं, तो तेज दर्द, जलन, उल्टी और पेशाब में रुकावट जैसी परेशानियां होने लगती हैं।

किडनी स्टोन के प्रमुख प्रकार

1. कैल्शियम स्टोन - सबसे सामान्य प्रकार, जो कैल्शियम ऑक्सलेट के कारण बनता है।
2. यूरिक एसिड स्टोन-शरीर में यूरिक एसिड बढ़ने से बनता है, खासकर जो लोग ज्यादा मांस या प्रोटीन खाते हैं।
3. स्ट्रूवाइट स्टोन-आमतौर पर यूरिन इन्फेक्शन के बाद बनने वाला स्टोन।
4. सिस्टीन स्टोन-आनुवंशिक कारणों से बनने वाला दुर्लभ प्रकार का स्टोन।

किडनी स्टोन यानी गुर्दे की पथरी आज के समय में तेजी से बढ़ती स्वास्थ्य समस्या बन चुकी है। विशेषज्ञों का कहना है कि कम पानी पीना, ज्यादा नमक वाला भोजन और शरीर में मिनरल्स का असंतुलन इसके प्रमुख कारण हैं। समय रहते सावधानी न बरती जाए, तो यह किडनी को गंभीर नुकसान पहुंचा सकती है।

किडनी में पथरी बनने के प्रमुख कारण

1. कम पानी पीना

जब शरीर में पानी की कमी होती है, तो यूरिन गाढ़ा हो जाता है। इससे मिनरल्स एक साथ चिपकने लगते हैं और धीरे-धीरे पथरी बनने लगती है।

2. ज्यादा नमक वाला खाना

अधिक सोडियम लेने से शरीर में कैल्शियम का उत्सर्जन बढ़ जाता है, जिससे किडनी में कैल्शियम क्रिस्टल बनने की संभावना बढ़ जाती है।

3. मिनरल्स का असंतुलन

कुछ लोगों में ऑक्सलेट या यूरिक एसिड अधिक मात्रा में बनता है। जब यह शरीर से बाहर नहीं निकल पाता, तो गुर्दे में जमा होकर स्टोन बन जाता है।

अन्य जोखिम कारक

- परिवार में किसी को किडनी स्टोन की समस्या होना
- मोटापा और डायबिटीज से ग्रसित लोग
- अत्यधिक मीठा या प्रोसेस्ड फूड का सेवन
- बहुत ज्यादा चाय, कॉफी या शक्कर लेना
- पेशाब को बार-बार रोकना
- हाई प्रोटीन डाइट
- कुछ दवाओं का लंबे समय तक सेवन

किडनी स्टोन विशेषज्ञों के अनुसार, पानी की कमी और नमक की अधिकता शरीर की किडनी पर सबसे बड़ा बोझ डालते हैं। अगर जीवनशैली पर ध्यान न दिया जाए, तो यह समस्या बार-बार लौट सकती है।

कैसे करें बचाव?

- दिनभर में कम से कम 8-9 गिलास पानी पिएं।
- नमक, पैकेज्ड और फास्ट फूड की मात्रा कम करें।
- पालक, चॉकलेट, नट्स जैसी ऑक्सलेट युक्त चीजें सीमित मात्रा में लें।
- डॉक्टर की सलाह के अनुसार कैल्शियम का सेवन नियंत्रित रखें।
- पेशाब को कभी न रोकें।
- नियमित रूप से यूरिक एसिड और किडनी फंक्शन टेस्ट कराते रहें।

छत्तीसगढ़ में पर्यटन को बढ़ावा देने राज्य सरकार की बड़ी पहल- अब मिलेगा 75% तक सब्सिडी...

छत्तीसगढ़ सरकार ने प्रदेश के भीतर पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री जन पर्यटन प्रोत्साहन योजना की शुरुआत की है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य है कि राज्य के आम नागरिक बेहद कम खर्च में अपने ही राज्य की प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक धरोहर, धार्मिक स्थलों और सांस्कृतिक विरासत का अनुभव कर सकें। पर्यटन विभाग और IRCTC की साझेदारी में तैयार किए गए इस कार्यक्रम में वयस्कों को 75% तक और 2 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों को 85% तक सब्सिडी प्रदान की जाएगी। यह पहल न केवल लोगों को पर्यटन से जोड़ेगी, बल्कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था और स्थानीय रोजगार को भी मजबूत करेगी। यही कारण है कि इसे पर्यटन क्षेत्र में एक परिवर्तनकारी प्रयास माना जा रहा है।

योजना के अंतर्गत पर्यटकों के लिए कई सुविधाएँ शामिल की गई हैं, जिनमें एसी वाहन, प्रशिक्षित हिंदी-अंग्रेजी गाइड, ट्रैवल इंश्योरेंस, यात्रा के दौरान भोजन, स्नैक्स व पीने का पानी, तथा सुरक्षित और आरामदायक यात्रा की संपूर्ण व्यवस्था शामिल है। सभी टूर पैकेजों की शुरुआत और समाप्ति रायपुर रेलवे स्टेशन से होगी, जिससे यात्रियों को किसी प्रकार की अतिरिक्त परेशानी न हो। इस योजना का लाभ उठाने के लिए कम से कम 10 यात्रियों का समूह आवश्यक है। सरकार का मानना है कि समूह आधारित सफर न केवल अधिक सुरक्षित होता है, बल्कि पर्यटकों के बीच संवाद और अनुभव साझा करने का अवसर भी प्रदान करता है।

योजना के पहले चरण में चार प्रमुख टूर पैकेजों की घोषणा की गई है। पहला पैकेज रायपुर सिटी टूर है, जिसमें राम मंदिर, ऊर्जा पार्क, पुरखौती मुक्तांगन, नंदनवन जू, कौशल्या माता मंदिर और छत्तीसगढ़ ट्राइबल म्यूजियम जैसे प्रसिद्ध स्थल शामिल हैं। यह दिवसीय भ्रमण राजधानी को जानने और उसकी सांस्कृतिक छवि को करीब से महसूस करने का शानदार मौका देता है। दूसरा पैकेज रायपुर धार्मिक टूर है, जिसमें हनुमान मंदिर, मां बंजारी मंदिर, कैवल्य धाम जैन मंदिर, इस्कॉन मंदिर, महामाया मंदिर और दंतेश्वरी मंदिर के दर्शन करवाए जाते हैं। यह पैकेज उन यात्रियों के लिए बेहद खास है जो धार्मिक आस्था और आध्यात्मिकता से जुड़े अनुभवों की तलाश में रहते हैं।

तीसरा पैकेज रायपुर-जगदलपुर सर्किट, दो रात और तीन दिनों का टूर है। इसमें पर्यटक बस्तर क्षेत्र की अद्भुत प्राकृतिक धरोहरें जैसे चित्रकोट जलप्रपात, तीरथगढ़, कुटुमसर गुफा, कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान और स्थानीय सांस्कृतिक आकर्षणों का आनंद ले सकेंगे। इस टूर में होटल में डबल-शेयरिंग रूम और दैनिक भोजन जैसी सुविधाएँ भी शामिल हैं। चौथा पैकेज रायपुर-सिरपुर-बारनवापारा सर्किट, एक रात और दो दिनों का है। इसमें सिरपुर के ऐतिहासिक मंदिरों, पुरातात्विक स्थलों और बारनवापारा अभयारण्य की जंगल सफारी का रोमांचक अनुभव यात्रियों को मिलेगा।

राज्य सरकार का कहना है कि यह योजना पर्यटन को सुदूर अंचलों तक पहुँचाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी। बस्तर, सिरपुर, बारनवापारा और रायपुर जैसे क्षेत्रों की सांस्कृतिक व प्राकृतिक विरासत न केवल पर्यटकों को आकर्षित करेगी, बल्कि स्थानीय होटल व्यवसाय, गाइड, परिवहन सेवाओं और हस्तशिल्प उद्योग को भी नया जीवन देगी। मुख्यमंत्री ने अपने संदेश में कहा है कि छत्तीसगढ़ का प्राकृतिक और सांस्कृतिक सौंदर्य हर नागरिक तक पहुँचना चाहिए, और यह योजना उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

छत्तीसगढ़ पर्यटन विभाग का लक्ष्य है कि आने वाले समय में इस योजना में और भी नए टूर पैकेज शामिल किए जाएँ, ताकि राज्य की विविधता को अधिक व्यापक रूप से प्रस्तुत किया जा सके। यह योजना न केवल पर्यटन को बढ़ावा देगी, बल्कि प्रदेश की पहचान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और मजबूत बनाएगी।

क्रिसमस- रोशनी, उम्मीद और इंसानी जुड़ाव का अनोखा उत्सव...

आलेख - रविश बेंजामिन

हर साल 25 दिसंबर को मनाया जाने वाला क्रिसमस दुनिया के सबसे लोकप्रिय और दिल छू लेने वाले त्यौहारों में से एक है। समय के साथ इसकी परंपराएँ बदलती गईं, लेकिन इसका मूल संदेश आज भी वैसा ही है–प्रेम बाँटना, उम्मीद जगाना और इंसानियत की रोशनी को चारों ओर फैलाना। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में लोग अक्सर अपनेपन और संवेदनशीलता से दूर होते जा रहे हैं, पर यही त्यौहार हमें याद दिलाता है कि रिश्ते, दया और एक-दूसरे के लिए समय निकालना अभी भी जीवन की सबसे कीमती पूँजी है।

क्रिसमस केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक भावनात्मक अनुभव है, जो हर किसी के भीतर छुपी उस गर्माहट को जागृत करता है जिसे हम अक्सर रोजमर्रा की दुनिया में भूल जाते हैं। चमकते क्रिसमस ट्री, खिड़कियों पर टँगी रंग-बिरंगी लाइटें, मीठे केक की खुशबू, बच्चों की खिलखिलाहट और सांता की कहानियाँ—ये सभी मिलकर ऐसा वातावरण बनाते हैं जो उत्साह, ऊर्जा और सकारात्मकता का एहसास कराता है। दुनिया में बहुत कम ऐसे त्योहार हैं जो संस्कृतियों से लेकर महाद्वीपों तक को इस तरह जोड़ते हैं।

भारत में क्रिसमस का बदलता और बढ़ता रंग

भारत बहु-सांस्कृतिक देश है, जहाँ हर धर्म और परंपरा के उत्सव को खुले दिल से स्वीकार किया जाता है। इसी सांस्कृतिक विविधता के चलते क्रिसमस भी यहाँ एक व्यापक सामाजिक त्योहार बन चुका है। चाहे ईसाई समुदाय हो या अन्य धर्मों के लोग, यह उत्सव सभी को अपना लेता है। बड़े शहरों से लेकर छोटे कस्बों तक, 25 दिसंबर को बाज़ारों में सजावट दिखाई देती है, बेकरी दुकानों पर भीड़ रहती है और बच्चों के चेहरे पर सांता के आने की कल्पना चमक बनकर उभरती है।

गोवा में क्रिसमस का नज़ारा सबसे विशेष माना जाता है। यूरोपीय प्रभाव से जुड़ी इसकी सड़कें, प्राचीन चर्च, संगीत और रंगारंग परेड इसे बेहद यादगार बनाती हैं। वहीं केरल, मुंबई, दिल्ली और शिमला जैसे शहरों में भी चर्चों की मिडनाइट मास, क्रिसमस कैरल्स और सजावट एक अलग ही माहौल पैदा करते हैं। पहाड़ी इलाकों में बर्फ़ीली रातों के बीच क्रिसमस मनाने का अनुभव पर्यटकों के लिए बेहद जादुई है, जहाँ मोमबत्तियों की रोशनी और बर्फ़ की सफेदी मिलकर एक स्वप्न-सा दृश्य रच देती है।

नई पीढ़ी में सीक्रेट सैंटा की परंपरा काफी लोकप्रिय हो चुकी है—चाहे स्कूल हों, ऑफिस हों या हाउसिंग सोसायटीज़। बिना नाम बताए उपहार देना, किसी के चेहरे पर मुस्कान लाना, और छोटी-छोटी खुशियों को साझा करना इस ट्रेंड का मुख्य मकसद है। आज के समय में, जहाँ लोग डिजिटल रूप से तो जुड़ते हैं पर भावनात्मक रूप से दूर होते जाते हैं, यह छोटा सा खेल भी रिश्तों में मिठास घोलने का माध्यम बन गया है।

क्रिसमस की परंपराएँ और उनका अर्थ

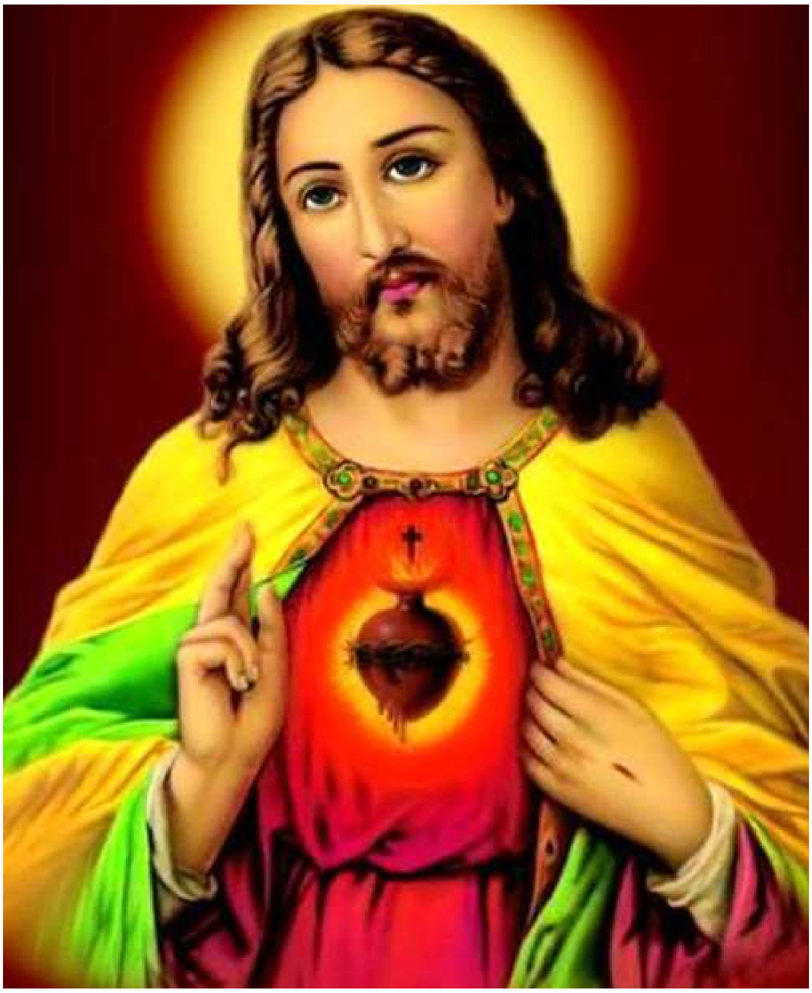

क्रिसमस की हर परंपरा एक गहरी प्रतीकात्मकता लिए होती है। उदाहरण के तौर पर—

क्रिसमस ट्री जीवन में हरियाली, उम्मीद और स्थिरता का प्रतीक है। चाहे सर्दी कितनी भी कठोर हो, यह पेड़ हमें सिखाता है कि मजबूती और सकारात्मकता हमेशा जीवित रहती है।

स्टार (तारा) संकेत है उस रोशनी का, जो कठिन समय में राह दिखाती है। यह हमें याद दिलाता है कि अंधेरा चाहे कितना गहरा हो, एक छोटी सी चमक भी उम्मीद जगाने के लिए काफी है।

सांता क्लॉज़ उदारता, करुणा और नि-स्वार्थ भाव का प्रतीक है—यह संदेश देता है कि किसी को खुश करने के लिए बड़े प्रयासों की नहीं, बस एक दयालु दिल की ज़रूरत होती है।

उपहार देना केवल वस्तु नहीं, बल्कि भावना का आदान-प्रदान है—यह बताता है कि हम एक-दूसरे की कद्र करते हैं।

इन सारी परंपराओं के बीच एक चीज़ सामान्य है—खुशी बाँटना। यही वजह है कि दुनिया भर में लोग इस दिन चैरिटी करते हैं, ज़रूरतमंदों की मदद करते हैं, और अपने समाज के प्रति योगदान देने की सोचते हैं।

आज के समय में क्रिसमस का महत्व

मोबाइल स्क्रीन, व्यस्त दिनचर्या और मानसिक तनाव के बीच इंसानी रिश्तों की गरमाहट कम होती जा रही है। क्रिसमस हमें याद दिलाता है कि जीवन केवल उपलब्धियों की दौड़ नहीं, बल्कि दूसरों के लिए समय निकालने का नाम भी है। यह हमें सिखाता है कि साझा करना, माफ़ करना, मुस्कान देना और अपनेपन का एहसास कराना ही असली इंसानियत है।

साल भर चलने वाली थकान, तनाव और उलझनों के बीच क्रिसमस एक ठहराव जैसा आता है—जहाँ हम रुककर सोचते हैं कि क्या हम अपने परिवार, दोस्तों, पड़ोसियों और समाज के लिए पर्याप्त कर रहे हैं? क्या हम उतने ही संवेदनशील और दयालु हैं, जितना हम खुद के लिए उम्मीद करते हैं? इस त्योहार का सार यही है कि छोटी-सी दया भी दुनिया को बेहतर बना सकती है।

तेजी से फैल रहा है नोरोवायरस, जानें इस बीमारी के लक्षण और किसे होता है खतरा...

नोरोवायरस तेजी से फैल रहा है. सबसे ज्यादा जोखिम में 65 वर्ष से अधिक उम्र के लोग, छोटे बच्चे और कमजोर प्रतिरक्षा वाले लोग हैं.

नोरोवायरस , जिसे अक्सर विंटर वोमिटिंग डिजीज कहा जाता है , पूरे यूनाइटेड स्टेट्स में तेजी से फैल रहा है और CDC के अनुसार हाल के हफ्तों में पॉजिटिव मामलों का प्रतिशत अगस्त के । परसेंट से बढ़कर नवंबर तक 14 प्रतिशत तक पहुंच गया है। यह बढ़ोतरी ऐसे समय में हो रही है जब COVID-19 काली खांसी और सीजनल फ्लू के मामलों में भी उछाल देखा जा रहा है। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी की रिपोर्ट बताती है कि लुइसियाना , मिशिगन और इंडियाना में गंदे पानी में वायरस का स्तर 69 त्न तक बढ़ गया है , जिससे यह साफ होता है कि वायरस समुदाय में तेजी से फैल रहा है। यह वायरस किसी इन्फेक्टेड व्यक्ति की उल्टी या मल के संपर्क से फैलता है और मल-मुंह मार्ग के जरिए संक्रमण फैलाने वाला सबसे तेज वायरस माना जाता है।

नोरोवायरस गैस्ट्रोएंटेराइटिस पैदा करता है यानी पेट और आंतों में जलन , जिसके कारण उल्टी , दस्त , पेट दर्द , मतली , सिरदर्द , बुखार और डिहाइड्रेशन जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। संक्रमण के 12 से 48 घंटे बाद लक्षण प्रकट होते हैं और यह बीमारी सालाना लगभग 20 मिलियन लोगों को प्रभावित करती है । 65 वर्ष से अधिक उम्र के लोग , छोटे बच्चे और कमजोर इम्यून सिस्टम वाले लोग इसके गंभीर शिकार हो सकते हैं । वायरस बूंदों , संक्रमित सतहों , दूषित भोजन-पानी और भीड़भाड़ वाले स्थानों—जैसे नर्सिंग होम , चाइल्ड केयर सेंटर , क्रूज शिप—में तेजी से फैलता है । अमेरिका में खाने से होने वाली बीमारियों का सबसे बड़ा कारण यही वायरस है और बहुत बार ऑयस्टर या अन्य सी-फूड पहले से ही प्राकृतिक रूप से संक्रमित मिल जाते हैं । 2024-25 सीजन में मामलों में अचानक बढ़ोतरी का बड़ा कारण नया स्ट्रेन GII.1। है , जो करीब 75 प्रतिशत मामलों के लिए जिम्मेदार है , जबकि पहले GII.4 प्रमुख था । हर साल अमेरिका में लगभग 100000 लोग अस्पताल में भर्ती होते हैं और करीब 900 मौतें होती हैं , इसलिए 2025 में यह उछाल स्वास्थ्य एजेंसियों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है ।

नोरोवायरस के कुल 10 ग्रुप और 48 प्रकार हैं , जिनमें GII.4 सबसे आम रहा है । इसका कोई विशेष इलाज नहीं है और उपचार केवल लक्षणों को नियंत्रित करने पर केंद्रित होता है , जैसे हाइड्रेशन , आराम और हल्का भोजन । CDC सलाह देता है कि लक्षण ठीक होने के कम से कम 48 घंटे बाद तक खाना न बनाएं और न ही दूसरों की देखभाल करें , क्योंकि संक्रमण फैलने का खतरा बना रहता है । बचाव के लिए बार-बार साबुन और पानी से हाथ धोना , फलों-सब्जियों को धोना , भोजन विशेषकर सी-फूड को अच्छी तरह पकाना , संक्रमित व्यक्ति से दूरी रखना , सतहों को साफ-सैनिटाइज करना और गंदे कपड़ों को अच्छी तरह धोना अत्यंत जरूरी है । हैंड सैनिटाइजर इस वायरस पर सीमित प्रभाव डालता है , इसलिए साबुन-पानी ही सर्वोत्तम सुरक्षा है ।

नागरिकों की सुविधा और सुरक्षा के लिए पासपोर्ट सत्यापन रिकॉर्ड अब डिजिलॉकर पर उपलब्ध

इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाय) के तहत राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस प्रभाग (एनईजीडी) ने विदेश मंत्रालय (एमईए) के सहयोग से, डिजिलॉकर प्लेटफ़ॉर्म पर पासपोर्ट सत्यापन रिकॉर्ड (पीवीआर) की सुविधा उपलब्ध कराकर नागरिक सेवाओं में एक बड़े विस्तार का ऐलान किया है। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत डिजिलॉकर, एक सुरक्षित, क्लाउड-आधारित प्लेटफार्म है, जो डिजिटल दस्तावेज़ों और प्रमाणपत्रों को जारी करने, संग्रहित करने, साझा करने और सत्यापित करने में मददगार है।

नागरिकों के लिए दस्तावेज़ प्रबंधन को सरल बनाकर और भौतिक रिकार्ड्स पर निर्भरता को कम करते हुए यह पहल, डिजिटल इंडिया के विज़न को आगे बढ़ाने की दिशा में एक अहम कदम है। इस एकीकरण के साथ, पासपोर्ट सत्यापन रिकार्ड को अब डिजिलॉकर व्यवस्था में सुरक्षित रूप से एक्सेस, संग्रहित, साझा और डिजिटल रूप से सत्यापित किया जा सकता है, जिससे कागज़ रहित, संपर्क रहित और नागरिक-केंद्रित सेवा वितरण को बढ़ावा मिलेगा।

सफल सत्यापन के बाद, नागरिक अपने डिजिलॉकर खाते के जारी किए गए दस्तावेज़ भाग में अपने पासपोर्ट सत्यापन रिकॉर्ड देख सकते हैं। यह पहल नागरिकों के लिए आधिकारिक सत्यापन दस्तावेज़ों (ओवीडी) की सुविधा और पहुँच को बढ़ाएगा, और यह भी सुनिश्चित करेगा कि उनके रिकॉर्ड डिजिलॉकर में सुरक्षित, विश्वसनीय और डिजिटल रूप से सत्यापन योग्य रहें।

डिजिलॉकर पर पीवीआर की उपलब्धता नागरिकों को कई प्रत्यक्ष लाभ प्रदान करती है

सुविधा और किसी भी समय पहुँच- सफल सत्यापन के बाद नागरिक, भौतिक प्रतियाँ साथ रखने या संग्रहित किए बगैर, वेब पोर्टल और मोबाइल एप्लिकेशन, दोनों के ज़रिए अपने डिजिलॉकर खाते के जारी किए गए दस्तावेज़ भाग से अपने पासपोर्ट सत्यापन रिकॉर्ड को आसानी से हासिल कर सकेंगे।

तेज़ प्रक्रियाएँ और कम कागज़ी कार्रवाई

पीवीआर तक डिजिटल पहुँच से यात्रा, रोज़गार और अनुपालन जैसे मामलों में सत्यापन संबंधी प्रक्रियाओं में बड़ा सुधार होने की उम्मीद है, जिससे मैनुअल कागजी कार्रवाई कम होगी और सत्यापित पासपोर्ट रिकॉर्ड पर निर्भर रहने वाले नागरिकों और संस्थानों, दोनों के लिए समय की बचत होगी।

सुरक्षित, छेड़छाड़-रहित और प्रामाणिक रिकॉर्ड

डिजिलॉकर के ज़रिए उपलब्ध कराए गए पीवीआर, संबंधित सरकारी प्रणालियों द्वारा सीधे डिजिटल रूप में जारी किए जाते हैं, जो डिजिलॉकर की सुरक्षित संरचना के मुताबिक प्रमाणिकता, अखंडता और किसी भी तरह की छेड़छाड़ से सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

आसान डिजिटल साझाकरण और सत्यापन

नागरिक, डिजिलॉकर के ज़रिए अधिकृत अनुरोधकर्ताओं के साथ अपने पीवीआर को डिजिटल रूप से साझा कर सकेंगे, जिससे तत्काल, सहमति-आधारित पहुँच और सत्यापन मुमकिन होगा, और

सत्यापित फोटोकॉपी या कई भौतिक कॉपी देने की ज़रुरत कम होगी।

कागज़ रहित और हरित शासन के लिए समर्थन

पासपोर्ट-संबंधी सत्यापन रिकॉर्ड को पूरी तरह से डिजिटल वर्कफ़्लो में बदलकर, यह पहल कागज़ रहित शासन, संसाधन दक्षता और पर्यावरण के प्रति ज़िम्मेदार प्रशासनिक प्रथाओं की दिशा में सरकार के प्रयासों को आगे बढ़ाती है।

पीवीआर का डिजिलॉकर के साथ एकीकरण नागरिक सेवाओं के आधुनिकीकरण और भारत के डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे को मज़बूत करने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा। यह सुरक्षित डिजिटल रिकॉर्ड को उपयोगकर्ता-अनुकूल पहुँच के साथ जोड़कर %नागरिक-प्रथम% के दृष्टिकोण को मज़बूत करता है, जिससे सरकारी प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और विश्वास बढ़ता है।

विदेश मंत्रालय और एनईजीडी, एमईआईटीवाय के बीच यह सहयोग, एक सुरक्षित और कुशल सेवा वितरण के लिए डिजिटल

प्लेटफ़ॉर्म का लाभ उठाने हेतु एक समग्र सरकारी दृष्टिकोण को दर्शाता है। इस कदम से सत्यापन की प्रक्रिया को और बेहतर बनाकर, सेवा में सुधार लाकर, और सार्वजनिक तथा निजी उपयोग के मामलों में सुरक्षित डिजिटल दस्तावेज़ों को अपनाने में तेज़ी लाकर लाखों पासपोर्ट आवेदकों और धारकों को लाभ होने की उम्मीद है।

रायपुर में भारत-साउथ अफ्रीका वनडे से पहले पहुंचे BCCI वाइस चेयरमैन राजीव शुक्ला, कहा–छत्तीसगढ़ अब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का उभरता केंद्र

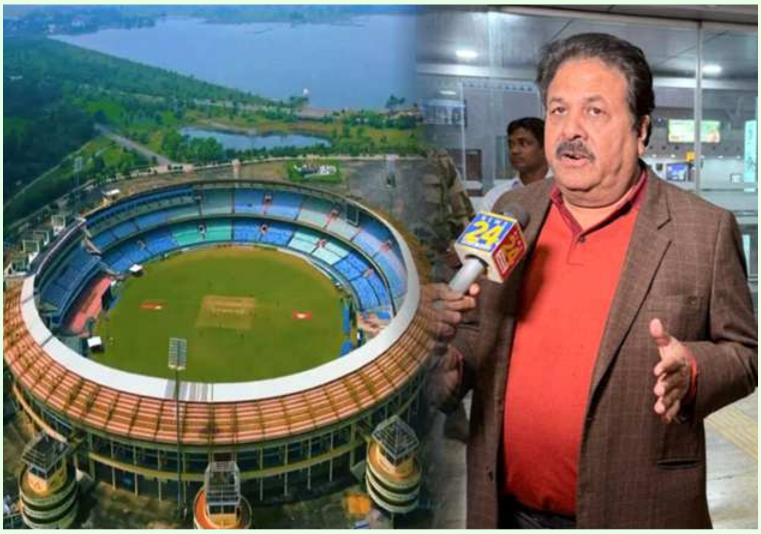

BCCI वाइस चेयरमैन राजीव शुक्ला रायपुर पहुंचे और कहा कि छत्तीसगढ़ में क्रिकेट तेजी से बढ़ रहा है। स्टेडियम की सुविधाओं को उन्नत करने के लिए व्यापक योजनाएँ शुरू की जा रही हैं। 3 दिसंबर को रायपुर अंतराष्ट्रीय क्रिकेट का बड़ा मेजबान बनेगा।

भारत और साउथ अफ्रीका के बीच वनडे सीरीज का दूसरा मैच 3 दिसंबर को रायपुर के शहीद वीर नारायण सिंह इंटरनेशनल स्टेडियम में खेला जाएगा, जिसे लेकर पूरे प्रदेश में उत्साह का माहौल है। अंतरराष्ट्रीय मुकाबले की तैयारियों के बीच BCCI के उपाध्यक्ष एवं वाइस चेयरमैन राजीव शुक्ला के रायपुर आगमन ने चर्चाओं को और भी जीवंत कर दिया। एयरपोर्ट पर हुए स्वागत के बाद शुक्ला ने कहा कि छत्तीसगढ़ अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मानचित्र पर अपनी मजबूत पहचान दर्ज करा चुका है और यहां लगातार बड़े मुकाबले आयोजित होना इसका प्रमाण है।

हमसे बातचीत में शुक्ला ने बताया कि स्टेडियम की सुविधाओं को और उन्नत करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि BCCI और स्थानीय प्रबंधन संयुक्त बैठकें कर स्टेडियम के इंफ्रास्ट्रक्चर, दर्शक सुविधाओं और खिलाड़ियों की आवश्यकताओं के अनुरूप विशेष सुधार योजनाएँ तैयार कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि भविष्य में रायपुर में और अधिक अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों की संभावना है, जिससे प्रदेश में क्रिकेट गतिविधियों को नई दिशा और गति मिलेगी।

रांची में खेले गए पहले वनडे में विराट कोहली की 135 रनों की शानदार पारी और रोहित शर्मा के 57 रनों ने टीम इंडिया को मजबूत जीत दिलाई थी। अब दूसरा मुकाबला रायपुर में होने जा रहा है, जहाँ दर्शकों को एक बार फिर रोहित और कोहली से दमदार प्रदर्शन की उम्मीद है। भारत सीरीज में फिलहाल 1-0 से आगे है, और यह मैच न सिर्फ खेल के लिहाज से, बल्कि प्रदेश के क्रिकेट विकास के लिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। आगामी माह प्रकाशित होने वाली पत्रिका के लिए यह आयोजन छत्तीसगढ़ के खेल विकास की बड़ी उपलब्धि के रूप में दर्ज होगा।

डिजिटल अर्थव्यवस्था के दौर में कर पारदर्शिता को कैसे बनाएंगे देश? वित्त मंत्री सीतारमण ने दिए बड़े संकेत...

वैश्विक डिजिटलीकरण, नए वित्तीय उत्पादों और उभरते जोखिमों के बीच वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि दुनिया को कर सूचना साझा करने के लिए और अधिक समन्वय, तकनीकी क्षमता और आपसी विश्वास की जरूरत है। उन्होंने '18वीं ग्लोबल फोरम प्लेनरी मीटिंग' में जोर देकर कहा कि पारदर्शिता तभी प्रभावी होगी जब सूचना का आदान-प्रदान ठोस परिणामों में बदले और जनता का विश्वास कायम रहे।

डिजिटल वित्त के विस्तार के साथ पारदर्शिता और सहयोग पर जोर

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को आयोजित '18वीं ग्लोबल फोरम प्लेनरी मीटिंग' में कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था तेजी से डिजिटल हो रही है और नए-नए वित्तीय उत्पाद लगातार सामने आ रहे हैं। ऐसे माहौल में कर चोरी रोकने, वित्तीय प्रवाह को ट्रैक करने और कर प्रणालियों को अधिक पारदर्शी बनाने के लिए देशों के बीच समय पर सूचना साझा करना अनिवार्य हो गया है। उन्होंने कहा कि पारदर्शिता केवल डेटा साझा करने से पूरी नहीं होती, बल्कि यह तभी सार्थक होती है जब उसके आधार पर मापनीय और ठोस परिणाम सामने आएं। इस दौरान उन्होंने कर प्रणाली में निष्पक्षता और नागरिकों के विश्वास को बनाए रखने को सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता बताया। सीतारमण ने कहा कि एआई और नई तकनीकों की मदद से सूचनाओं की गुणवत्ता, सुरक्षा और उपयोगिता में वृद्धि हो सकती है, लेकिन इनका उपयोग जिम्मेदारी के साथ होना चाहिए।

वैश्विक मंच में 170 सदस्य, बढ़ते जोखिम और साइबर सुरक्षा की चुनौती

अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि कर उद्देश्यों के लिए पारदर्शिता और सूचना आदान-प्रदान का वैश्विक मंच 170 क्षेत्राधिकारों वाला एक बहुपक्षीय ढांचा है, जो अंतरराष्ट्रीय मानकों को लागू करने की निगरानी और समीक्षा करता है। उन्होंने कहा कि डिजिटल अर्थव्यवस्था के तेजी से विस्तार, नए वित्तीय उत्पादों, जटिल लाभकारी स्वामित्व संरचनाओं और साइबर सुरक्षा जोखिमों के साथ नई चुनौतियाँ भी पैदा हो रही हैं जिन्हें कोई भी देश अकेले हल नहीं कर सकता। इन चुनौतियों का समाधान तभी संभव होगा जब देशों के बीच विश्वास, समन्वय और सही सूचनाओं का समय पर आदान-प्रदान स्थापित हो, उन्होंने कहा। इस संदर्भ में सीतारमण ने यह भी उल्लेख किया कि पारदर्शिता तभी निष्पक्ष हो सकती है जब देशों के बीच स्पष्ट नियम, पारस्परिक सम्मान और साझा उद्देश्य मौजूद हों।

भारत में बढ़ा स्वैच्छिक अनुपालन, तकनीक और एआई बना बड़ा सहायक

वित्त मंत्री ने कहा कि भारत ने बीते दशक में कर प्रणालियों में निष्पक्षता, मजबूती और तकनीकी सुधारों के कारण स्वैच्छिक अनुपालन को मजबूत किया है। भारत जोखिम और अनुपालन के व्यापक विश्लेषण के साथ प्राप्त अंतरराष्ट्रीय कर सूचनाओं को एकीकृत कर रहा है, जिससे कर चोरी की पहचान अधिक प्रभावी ढंग से हो पा रही है। उन्होंने कहा कि तकनीक और कृत्रिम मेधा (ड्ढ) सूचना को तेजी और कुशलता से समझने में मदद करती हैं, लेकिन सर्वोपरि भूमिका हमेशा मानवीय निर्णय, संस्थागत जिम्मेदारी और प्रक्रिया के प्रति सम्मान की होती है। उन्होंने यह भी कहा कि नवाचार और जवाबदेही का संतुलन ही किसी कर प्रणाली को दीर्घकालिक मजबूती और विश्वसनीयता प्रदान करता है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस वैश्विक मंच में भारत की सक्रिय भूमिका आगे आने वाले वर्षों में वैश्विक कर पारदर्शिता को नई दिशा दे सकती है।

राफेल-M और न्यूक्लियर सब-मरीन से बदलेगा नौसैनिक संतुलन
क्या भारत हिंद महासागर में नई शक्ति बनकर उभरेगा?

फ्रांस से 26 राफेल–मरीन विमान और रूस से मिलने वाली न्यूक्लियर सबमरीन—भारतीय नौसेना एक नए परिवर्तन काल में प्रवेश कर रही है। बढ़ते चीनी–पाक दबाव के बीच यह दोहरी सैन्य बढ़त भारत को समुद्री शक्ति के नए मुकाम पर ले जा सकती है।

राफेल-मरीन डील अंतिम दौर में, INS विक्रांत की क्षमता में आएगा क्रांतिकारी बदलाव

भारतीय नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी ने पुष्टि की है कि फ्रांस से 26 राफेल–मरीन लड़ाकू विमानों की डील जल्द ही फाइनल हो जाएगी। यह सरकारी–स्तरीय बातचीत होने के कारण तेज़ी से आगे बढ़ रही है और अंतिम अनुमोदन के लिए फाइल जल्द ही कैबिनेट कमिटी ऑन सिक्योरिटी (CCS) के पास जाएगी। जुलाई 2023 में रक्षा मंत्रालय ने इस खरीद को सैद्धांतिक मंजूरी दी थी। राफेल–M की तैनाती मुख्य रूप से INS विक्रांत पर होगी, जिससे भारत के स्वदेशी कैरियर की स्ट्राइक क्षमता अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बन जाएगी। सौदा लगभग 63,000 करोड़ का है, जिसमें मेंटेनेंस, टेक्निकल सपोर्ट और लॉजिस्टिक पैकेज भी शामिल हैं। नौसेना पायलटों की ट्रेनिंग 2026 में शुरू होगी ताकि 2029 से शुरू होने वाली डिलीवरी के साथ ही ऑपरेशन निर्बाध रूप से शुरू किया जा सके। एक वरिष्ठ नौसैनिक अधिकारी ने मैगज़ीन से कहा, राफेल–रूकेवल एक लड़ाकू विमान नहीं है, यह हमारे एयर–विंग की सोच को नए ढंग से परिभाषित करेगा।

राफेल-रूकी आधुनिक युद्ध तकनीकें और 2029-2031 की डिलीवरी रोडमैप

राफेल–M को समुद्री युद्ध के लिए दुनिया के सर्वश्रेष्ठ प्लेटफॉर्म में गिना जाता है। इसका स्पेक्ट्रा इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर सिस्टम इसे लगभग स्टेल्थ बनाता है, जबकि हवा में ईंधन भरने की क्षमता इसे लंबी दूरी के मिशनों के लिए आदर्श प्लेटफॉर्म बनाती है। यह जेट हवा, पानी और जमीन—तीनों दिशाओं में हमले की क्षमता रखता है। इसमें मेटियोर, स्कैल्प और एक्सोसैट जैसी मिसाइलें हैं, 30mm ऑटो–कैनन है और कुल 14 हार्डप्वाइंट इसे बहु–भूमिका मिशनों में बेहद प्रभावी बनाते हैं। डिलीवरी 2029 के अंत में पहले बैच से शुरू होकर 2031 तक पूरी होगी। कुल 22 सिंगल–सीटर और 4 ट्विन–सीटर विमान भारतीय नौसेना के बेड़े में शामिल होंगे। इस बीच अमेरिका से मिलने वाले MQ-9B ड्रोन भी यही अवधि में नौसेना की निगरानी क्षमता में महत्वपूर्ण बढ़त देंगे। एक रक्षा विश्लेषक ने कहा, राफेल–M और MQ-9B का साथ भारत को समुद्री युद्ध की नई पीढ़ी में प्रवेश दिलाएगा।

रूस से न्यूक्लियर सबमरीन और चीन-पाकिस्तानी विस्तारवाद का जवाब

रूस के साथ भारत का न्यूक्लियर–संचालित सबमरीन समझौता भी नौसेना को दोहरी रणनीतिक बढ़त देता है। चक्र–क्लास SSN सबमरीन भारत को 2027–2028 के बीच मिलने की संभावना है और यह भारत की अंडरवॉटर डिटरेंस क्षमता को बड़े पैमाने पर मजबूत करेगी। यह करार ऐसे समय पर आया है जब चीन ने छ्व–15 कैरियर आधारित विमानों की तैनाती तेज कर दी है और पाकिस्तान को नई सबमरीनों से अतिरिक्त मजबूती मिल रही है। एडमिरल त्रिपाठी ने कहा, हम हर गतिविधि पर नजर रखे हुए हैं और हमारी तैयारियाँ उस स्तर पर हैं जहाँ राफेल–रूबड़ा बदलाव ला सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि राफेल–M, MQ-9B ड्रोन और न्यूक्लियर सबमरीन का संयुक्त प्रभाव भारत की समुद्री सीमाओं की सुरक्षा को नए आयाम देगा। हिंद महासागर क्षेत्र में शक्ति–संतुलन बदलने के संकेत स्पष्ट हैं—भारत अब केवल प्रतिक्रिया नहीं दे रहा, बल्कि सक्रिय सामरिक बढ़त स्थापित कर रहा है।

छत्तीसगढ़ में रेल अधोसंरचना का ऐतिहासिक विस्तार

बजट 22 गुना बढ़ा, प्रगति ने खोले विकास के नए दरवाज़े...

छत्तीसगढ़ में रेलवे अधोसंरचना विकास ने नई गति पकड़ ली है। रेल बजट आवंटन 2009–2014 की तुलना में 2025–2026 में 22 गुना बढ़ चुका है, जबकि नए ट्रैक बिछाने की रफ्तार भी 15 गुना से अधिक हो गई है। 1,932 किमी परियोजनाओं में से 1,023 किमी कार्य पूर्ण– राज्य के औद्योगिक, खनन एवं जन–परिवहन पर पड़ेगा बड़ा प्रभाव।

छत्तीसगढ़ में रेलवे अधोसंरचना को लेकर केंद्र सरकार ने जिस स्तर पर निवेश किया है, वह प्रदेश के विकास की नई तस्वीर प्रस्तुत करता है। संसद में मंत्री अश्विनी वैष्णव द्वारा साझा किए गए आंकड़ों के अनुसार राज्य के लिए रेलवे बजट आवंटन में पिछले दशक की तुलना में रिकॉर्ड वृद्धि हुई है–2009-2014 के औसत 311 करोड़ प्रतिवर्ष की तुलना में 2025-2026 में यह राशि बढ़कर 6,925 करोड़ हो गई है, यानी 22 गुना से भी अधिक। विशेषज्ञों के अनुसार यह वृद्धि केवल आंकड़ों का विस्तार नहीं, बल्कि राज्य की तेज़ी से बढ़ती परिवहन जरूरतों, औद्योगिक क्षमता और खनन क्षेत्रों में निर्बाध लॉजिस्टिक्स उपलब्ध कराने की दिशा में बड़ा कदम है। मंत्रालय का मानना है कि निवेश में यह बढ़ोतरी सीधे तौर पर रोजगार, व्यापार सुगमता और कनेक्टिविटी में सुधार लाएगी।

रेल मंत्री ने बताया कि ट्रैक बिछाने की गति में भी ऐतिहासिक बढ़ोतरी हुई है। जहां 2009 से 2014 के बीच केवल 32 किलोमीटर का नया ट्रैक जोड़ा गया था, वहीं 2014 से 2025 के बीच 1,189 किलोमीटर नई लाइनों का उद्घाटन किया गया है—जो पहले की तुलना में लगभग 15 गुना तेजी है। 1 अप्रैल 2025 तक राज्य में 26 स्वीकृत परियोजनाएँ सक्रिय हैं, जिनमें छह नई लाइनें और बीस डबल/मल्टीट्रैकिंग परियोजनाएँ शामिल हैं। कुल 1,932 किमी लंबाई वाली इन परियोजनाओं पर 31,619 करोड़ की स्वीकृत लागत निर्धारित है, जिनमें से 1,023 किमी कार्य पूर्ण हो चुका है। इनमें खरसियाङ्कधरमजयगढ़ नई लाइन, रायपुरङ्कतिटलागढ़ डबल लाइन, बिलासपुर–उरकुरा तृतीय लाइन, चांपा–झारसुगुड़ा तृतीय लाइन और पेंड्रा रोडङ्कअनूपपुर तृतीय लाइन जैसे कई महत्वपूर्ण खंड शामिल हैं। अधिकारियों का कहना है कि इन परियोजनाओं से राज्य के औद्योगिक गलियारों—विशेषकर कोयला, स्टील और एल्युमिनियम उद्योगों—को सुगम परिवहन मिलेगा, जिससे माल ढुलाई तेज़ और लागत प्रभावी होगी।

वर्तमान में चल रही कई प्रमुख परियोजनाएँ—जैसे डालीराजहरा–रावघाट नई लाइन, रावघाट–जगदलपुर नई लाइन, गेवरा रोड–पेंड्रा रोड नई लाइन और धरमजयगढ़–कोरबा नई लाइन—राज्य के दूरस्थ अंचलों को मुख्य रेल नेटवर्क से जोड़ेंगी। वहीं किरंदुलङ्कजगदलपुर डबल लाइन, झारसुगुड़ा–बिलासपुर चौथी लाइन और राजनांदगांवङ्कनागपुर तृतीय लाइन जैसे मल्टीट्रैकिंग प्रोजेक्ट कोयला रूट्स पर क्षमता बढ़ाने के लिए बेहद महत्वपूर्ण माने गए हैं। पिछले तीन वर्षों में रेलवे ने कुल 61 सर्वेक्षण पूरे किए हैं, जो 5,755 किमी क्षेत्र को कवर करते हैं। मंत्री वैष्णव ने यह भी स्पष्ट किया कि भूमि अधिग्रहण, वन स्वीकृतियाँ, स्थानीय कानून–व्यवस्था और भू–प्राकृतिक परिस्थितियाँ परियोजनाओं की गति को प्रभावित करती हैं, लेकिन इसके बावजूद छत्तीसगढ़ में परियोजनाएँ तय समयसीमा के भीतर तेजी से आगे बढ़ रही हैं। विशेषज्ञों के अनुसार भविष्य में ये विस्तार न केवल राज्य के आर्थिक नक्शे को बदलेंगे, बल्कि यात्रियों और उद्योगों दोनों के लिए नई संभावनाएँ भी उत्पन्न करेंगे।

रायपुर की पत्रकार प्रज्ञा प्रसाद पहुंचीं KBC 17 की हॉट सीट, 7 महीने की कठिन जर्नी ने खोला किस्मत का दरवाज़ा...

रायपुर की युवा पत्रकार प्रज्ञा प्रसाद ने 'कौन बनेगा करोड़पति 17' की हॉट सीट तक पहुंचकर न केवल शहर बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ का नाम रोशन किया है। अमिताभ बच्चन के साथ उनकी यह जर्नी प्रेरणादायक है, जिसमें उन्होंने बताया कि चब्रष्ट का सिलेक्शन सिर्फ किस्मत नहीं, बल्कि लंबे समय की मेहनत, धैर्य और नॉलेज का सफर है।

प्रज्ञा प्रसाद का फेसबुक पोस्ट वायरल, लंबी सिलेक्शन प्रक्रिया पढ़कर लोग हुए हैरान

रायपुर की पत्रकार प्रज्ञा प्रसाद के KBC की हॉट सीट तक पहुंचने की खबर सामने आते ही सोशल मीडिया पर बधाइयों की बाढ़ आ गई। उन्होंने खुद फेसबुक पर एक विस्तृत पोस्ट लिखकर बताया कि इस शो तक पहुंचना किसी बड़े संघर्ष से कम नहीं था। प्रज्ञा ने बताया कि केबीसी की फोन लाइन अप्रैल में खुली थी और तब से उन्होंने हर दिन SonyLIV ऐप पर सवालों के जवाब दिए। मई में उन्हें दूसरा कॉल मिला, जहां कंप्यूटरीकृत दो सवाल पूछे गए। दोनों सही होने के बाद तीसरा कॉल आया और फिर उन्हें मुंबई बुलाया गया। वहां पवार पब्लिक स्कूल में लिखित परीक्षा और 100 से अधिक पन्नों की लंबी बुकलेट भरनी पड़ी। इसके बाद पर्सनल इंटरव्यू, स्क्रीन टेस्ट और 25 मिनट की बातचीत के साथ चार जीके सवालों से होते हुए उनका नाम फाइनल लिस्ट में आया। यह पूरी प्रक्रिया सात महीनों तक चली और हर चरण में तनाव और उम्मीदें दोनों साथ चलती रहीं। उन्होंने बताया कि लिखित परीक्षा के भारी सवाल देखकर लगा कि शायद पास नहीं हो पाऊंगी, लेकिन रिजल्ट आने पर खुद पर भरोसा और बढ़ गया।

KBC टीम का सहयोग और शो के प्रेशर का असली अनुभव हॉट सीट पर मिला

प्रज्ञा ने अपनी पोस्ट में यह भी बताया कि KBC और चैनल कंटेस्टेंट के ट्रैवल, होटल, खाने और शूटिंग से जुड़े सभी खर्च खुद वहन करते हैं। दो व्यक्तियों के आने-जाने से लेकर होटल और सेट तक की सुविधा टीम द्वारा उपलब्ध कराई जाती है। प्रज्ञा कहती हैं कि टीम आपका इतना ध्यान रखती है कि मुंबई आकर किसी बात की चिंता नहीं करनी पड़ती। उन्होंने यह भी बताया कि 'फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट' शो का सबसे कठिन पड़ाव है क्योंकि सवाल भले आसान हो, लेकिन सबसे तेज़ जवाब देना ही असली चुनौती होता है। हॉट सीट पर बैठने के अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने कहा कि घर पर सवाल आसान लगते हैं, लेकिन असल सीट का दबाव पूरी तरह अलग होता है। जो 0 रुपये पर आउट होते हैं, उनके लिए अब मेरे मन में गहरा सम्मान है। उस सीट पर बैठकर ही समझ आता है कि वहां दिमाग कैसे काम करता है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि कई बार हम टीवी पर किसी प्रतिभागी को देखकर सोच लेते हैं कि इतना आसान सवाल नहीं आ पाया, लेकिन असल में वहां पहुंचने का दबाव ही खेल बदल देता है।

अमिताभ बच्चन के साथ बिताए पल को बताया 'सबसे बड़ी कमाई'

प्रज्ञा के अनुभव की सबसे खास बात थी महानायक अमिताभ बच्चन के साथ बिताया गया समय। उन्होंने लिखा कि 83 वर्ष की उम्र में उनकी ऊर्जा, विनम्रता और सादगी देखकर वे हैरान रह गईं। अमिताभ सर कंटेस्टेंट का जितना ध्यान रखते हैं, वह अविश्वसनीय है। जीवन में बहुत कुछ देखा, लेकिन उनका सान्निध्य करोड़ों रुपये से भी बढ़कर है। सोनी चैनल ने शो का प्रोमो भी जारी कर दिया है, जिसमें प्रज्ञा प्रसाद को अमिताभ बच्चन के सामने हॉट सीट पर बैठे हुए दिखाया गया है। यह एपिसोड 3 दिसंबर रात 9 बजे से टेलीकास्ट होगा। प्रज्ञा की इस उपलब्धि ने न केवल रायपुर बल्कि पूरे प्रदेश में उत्साह और गर्व का माहौल बना दिया है। उनके संघर्ष, मेहनत और जिद ने यह साबित कर दिया कि बड़े सपनों का रास्ता कठिन जरूर होता है, लेकिन संभव हमेशा होता है।

अगले साल से इन लोगों का पैन कार्ड हो जाएगा, ये 5 काम कभी नहीं कर पाएंगे

Aadhaar–PAN Linking: पैन को आधार कार्ड से लिंक करने की आखिरी तारीख 31 दिसंबर 2025 तय की गई है। ऐसे में अगर आपने लिंक नहीं किया तो 1 जनवरी 2026 से पैन कार्ड बंद हो सकता है। एक छोटी सी लापरवाही आपकी बड़ी वित्तीय योजनाओं में बाधा बन सकती है। लिहाजा समय रहते यह प्रक्रिया पूरी कर लें।

Aadhaar–PAN Linking: पैन कार्ड बंद होने से कई वित्तीय काम बंद हो जाएंगे।

Aadhaar–PAN Linking: भारत में रुपये-पैसों से जुड़ा कोई भी काम कराने के लिए पैन कार्ड (Pan Card) जरूरी होता है। जेब में रखा पैन कार्ड अब सिर्फ एक प्लास्टिक का टुकड़ा नहीं रह गया है। यह वित्तीय पहचान का सबसे बड़ा सबूत है। पैन कार्ड को आधार से लिंक करना भी जरूरी है। इसकी डेडलाइन 31 दिसंबर 2025 है। 1 जनवरी 2026 से आपका पैन कार्ड बंद हो सकता है। ऐसे में UIDAI ने सभी नागरिकों को अपनी Aadhaar जानकारी समय रहते अपडेट करने की सलाह दी है। सरकार ने साफ कहा है कि 31 दिसंबर तक PAN को Aadhaar से लिंक न करने पर एक जनवरी 2026 से PAN कार्ड डिएक्टिवेट कर दिया जाएगा।

UIDAI ने बताया कि Aadhaar में दर्ज नाम, पता, जन्म तिथि, मोबाइल नंबर और बायोमेट्रिक्स जैसे डेटा अगर पुराने हैं, तो बैंकिंग, वेलफेयर स्कीम या KYC से जुड़े काम अटक सकते हैं। यही वजह है कि नागरिकों को सलाह दी गई है कि वे समय पर अपनी जानकारी की जांच करें और जरूरत होने पर अपडेट कराएं।

किसे करना है आधार–PAN लिंक?

वित्त मंत्रालय की ओर से 3 अप्रैल 2025 को जारी नोटिफिकेशन के मुताबिक जिन लोगों को 1 अक्टूबर 2024 से पहले आधार आवेदन की एनरोलमेंट आईडी के आधार पर पैन जारी किया गया है, उन्हें 31 दिसंबर 2025 तक अपना आधार नंबर आयकर विभाग को देना जरूरी है। अगर आपने 1 अक्टूबर 2024 से पहले आधार कार्ड के लिए आवेदन किया था और उसी की एनरोलमेंट आईडी के जरिए पैन कार्ड बनवाया है, तो आपको 31 दिसंबर 2025 तक अपना आधार नंबर आयकर विभाग को जरूर बताना होगा।

किन लोगों को लिंक करना जरूरी नहीं है?

हर किसी को Aadhaar और [illegible] लिंक करने की जरूरत नहीं है। कुछ कैटेगरी को सरकार ने इससे छूट दी है। जैसे कि 80 साल से ऊपर के लोग (Super Senior Citizens), गैर-निवासी भारतीय (NRI), जम्मू-कश्मीर, असम और मेघालय के निवासी, और जो भारतीय नागरिक नहीं हैं, उन्हें Aadhaar–PAN लिंक करने की जरूरत नहीं है।

ऑपरेशन सिंदूर ने भारत को बनाया एशिया की प्रमुख शक्ति, ऑस्ट्रेलिया की लोवी इंस्टिट्यूट ने बताया दुनिया की तीसरी महाशक्ति...

पाकिस्तान के खिलाफ चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर ने भारत को सुपर पावर की कतार में खड़ा कर दिया है। ऑस्ट्रेलिया की लोवी इंस्टिट्यूट ने दुनिया की 27 प्रमुख महाशक्तियों में भारत को तीसरा स्थान दिया है। लोवी की एशिया पावर इंडेक्स 2025 में भारत को प्रमुख शक्ति का दर्जा दिया गया है। लोवी इंस्टिट्यूट के एशिया पावर इंडेक्स 2025 के अनुसार, ऑपरेशन सिंदूर और अन्य कारकों ने भारत को एशिया में एक प्रमुख शक्ति का दर्जा दिलाया है। ऑस्ट्रेलियाई संस्थान की तरफ से ये इंडेक्स शुरू किए जाने के बाद पहली बार भारत का व्यापक शक्ति स्कोर 40 अंक की सीमा को पार कर गया है। जिसे लोवी इंस्टिट्यूट प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए एक बेंचमार्क मानता है। लोवी इंस्टिट्यूट के मुताबिक भारत एशिया की एकमात्र प्रमुख शक्ति है।

इंडेक्स में भारत की स्थिति

लोवी इंस्टिट्यूट ने दुनिया के 27 शक्तिशाली देशों में भारत को तीसरा स्थान दिया है। भारत ने कुल 100 में से 40.0 स्कोर हासिल किया है, साल 2025 में ओवरऑल स्कोर में भारत को 0.9 अंक यानी दो प्रतिशत का फायदा हुआ है। अन्य शक्तियों में अमेरिका 80.5 स्कोर के साथ पहले और चीन 73.7 स्कोर के साथ दूसरे नंबर पर है। इसके अलावा जापान को 38 और रूस को 32.1 अंक मिले हैं। इसके अलावा इस लिस्ट में पाकिस्तान 14.5 अंक के साथ 16वें पायदान पर है।

महाशक्ति के रूप में भारत का उदय

अमेरिका एशिया में घटते प्रभाव से जूझ रहा है और चीन एक असाधारण प्रतिस्पर्धी के रूप में अपनी स्थिति मजबूत कर रहा है। ऐसे में दो महाशक्तियों के बीच भारत का एकमात्र प्रमुख शक्ति के रूप में उभरना एशियाई रणनीतिक परिदृश्य में सत्ता परिवर्तन की शुरुआत का संकेत देता है। भारत की 2025 की चढ़ाई राष्ट्रीय शक्ति के कई आयामों में स्थिर सुधार का परिणाम है। 40.0 अंक हासिल करके और 27 देशों में से तीसरे स्थान पर रहकर भारत ने 2024 में जापान पर बनाई बढ़त को और मजबूत किया है।

भारत और चीन के बीच बड़ा अंतर

भारत पूरी दुनिया में आर्थिक से लेकर सामरिक शक्ति के रूप में पूरी दुनिया में तेजी से उभर रहा है। लेकिन प्रमुख प्रतिद्वंद्वी देश चीन और भारत के बीच लोवी इंस्टिट्यूट के स्कोर के लिहाज से काफी अंतर बना हुआ है। इसके बावजूद इस साल के स्कोर बताता हैं कि भारत एशिया में शक्ति संतुलन को प्रभावित करने के लिए आवश्यक

आर्थिक और सैन्य क्षमता का लगातार विस्तार कर रहा है।

भारत एशिया की महाशक्ति

लोवी इंस्टिट्यूट के एशिया पावर इंडेक्स 2025 के अनुसार, आपरेशन सिन्दूर और अन्य कारकों ने भारत को एशिया में एक प्रमुख शक्ति का दर्जा दिलाया है। ऑस्ट्रेलियाई संस्थान की तरफ से ये इंडेक्स शुरू किए जाने के बाद पहली बार भारत का व्यापक शक्ति स्कोर 40 अंक की सीमा को पार कर गया है। जिसे लोवी इंस्टिट्यूट प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए एक बेंचमार्क मानता है। लोवी इंस्टिट्यूट के मुताबिक भारत एशिया की एकमात्र प्रमुख शक्ति है।

इंडेक्स में भारत की स्थिति

लोवी इंस्टिट्यूट ने दुनिया के 27 शक्तिशाली देशों में भारत को तीसरा स्थान दिया है। भारत ने कुल 100 में से 40.0 स्कोर हासिल किया है, साल 2025 में ओवरऑल स्कोर में भारत को 0.9 अंक यानी दो प्रतिशत का फायदा हुआ है। अन्य शक्तियों में अमेरिका 80.5 स्कोर के साथ पहले और चीन 73.7 स्कोर के साथ दूसरे नंबर पर है। इसके अलावा जापान को 38 और रूस को 32.1 अंक मिले हैं। इसके अलावा इस लिस्ट में पाकिस्तान 14.5 अंक के साथ 16वें पायदान पर है।

महाशक्ति के रूप में भारत का उदय

अमेरिका एशिया में घटते प्रभाव से जूझ रहा है और चीन एक असाधारण प्रतिस्पर्धी के रूप में अपनी स्थिति मजबूत कर रहा है। ऐसे में दो महाशक्तियों के बीच भारत का एकमात्र प्रमुख शक्ति के रूप में उभरना एशियाई रणनीतिक परिदृश्य में सत्ता परिवर्तन की शुरुआत का संकेत देता है। भारत की 2025 की चढ़ाई राष्ट्रीय शक्ति के कई आयामों में स्थिर सुधार का परिणाम है। 40.0 अंक हासिल करके और 27 देशों में से तीसरे स्थान पर रहकर भारत ने 2024 में जापान पर बनाई बढ़त को और मजबूत किया है।

भारत और चीन के बीच बड़ा अंतर

भारत पूरी दुनिया में आर्थिक से लेकर सामरिक शक्ति के रूप में पूरी दुनिया में तेजी से उभर रहा है। लेकिन प्रमुख प्रतिद्वंद्वी देश चीन और भारत के बीच लोवी इंस्टिट्यूट के स्कोर के लिहाज से काफी अंतर बना हुआ है। इसके बावजूद इस साल के स्कोर बताता हैं कि भारत एशिया में शक्ति संतुलन को प्रभावित करने के लिए आवश्यक आर्थिक और सैन्य क्षमता का लगातार विस्तार कर रहा है।

तेजी से मजबूत हो रहा भारत

लोवी इंस्टिट्यूट की रिपोर्ट बताता ही है कि भारत की बेहतर स्थिति की वजह उसके मजबूत आर्थिक प्रदर्शन का प्रभाव है। भारत की अर्थव्यवस्था लगातार मजबूत होती जा रही है और इस बढ़ोतरी ने कनेक्टिविटी, तकनीकी योगदान और बाहरी प्रभाव के माध्यम से अधिक भू-राजनीतिक प्रासंगिकता में तब्दील किया है। वैश्विक निवेशकों के लिए भारत का आकर्षण अभूतपूर्व ऊंचाइयों पर पहुंच गया है। रिपोर्ट बताती है कि पहली बार भारत ने अपने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ते निवेश की बदौलत चीन को पछाड़कर दूसरा स्थान हासिल किया है।

ऑपरेशन सिंदूर ने दिखाई भारत की ताकत

लोवी की रिपोर्ट बताती है कि भारत की सैन्य क्षमता काफी आगे बढ़ी है और मई 2025 में शुरू किए गए ऑपरेशन सिंदूर ने इस धारणा के बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रिपोर्ट बताती है कि इस ऑपरेशन में भारत के प्रदर्शन ने विशेषज्ञ मूल्यांकन को प्रभावित किया। इससे देश की रक्षा क्षमता में दमदार हालिया युद्ध अनुभव जुड़ गया। भारत की सैन्य क्षमता में +2.8 अंकों की बढ़ोतरी इसी नए आत्मविश्वास को दर्शाती है।

कुछ मोर्चों पर सुधार की जरूरत

लोवी इंस्टिट्यूट की रिपोर्ट बताती है कि भारत का उदय कमजोर प्रभाव नेटवर्क की वजह से बाधित हो रहा है। रक्षा नेटवर्क स्कोर में गिरावट आई है और राजनयिक प्रभाव में मामूली सुधार के बावजूद ये देश की बढ़ती संसाधन शक्ति के साथ तालमेल नहीं बिठा पाया है। भारत सांस्कृतिक रूप से, बढ़ते रोड और रेल नेटवर्क की वजह से काफी सुधार कर रहा है। सीधी उड़ान कनेक्टिविटी, पर्यटन और शिक्षा के केंद्र के रूप में बढ़ती अपील के कारण भारत ने +2.8 अंक की बढ़ोतरी दर्ज किया है।

कमजोर मांग के बावजूद चीन मजबूत

लोवी की रिपोर्ट बताती है कि चीन 73.7 के स्कोर के साथ दूसरे स्थान पर है और वो अमेरिका के बाद एशिया की प्रमुख महाशक्ति के रूप में अपनी भूमिका को मजबूत करना जारी रखे हुए है। चीन ने राजनयिक रूप से पूरी दुनिया में अब तक का सबसे अधिक प्रभावशाली स्कोर हासिल किया है। हालांकि इसकी खरीद शक्ति में गिरावट आई है, जिसके आगे भी जारी रहने की संभावना है।

प्रभाव घटा फिर भी अमेरिका नंबर-1

ऑस्ट्रेलियाई संस्था लोवी इंस्टिट्यूट की रिपोर्ट में कहा गया है कि साल 2025 की रिपोर्ट में अमेरिका के प्रभाव में अप्रत्याशित रूप से गिरावट देखने को मिली है। रिपोर्ट साफ तौर पर बताती है कि ट्रम्प प्रशासन की नीतियां एशिया में अमेरिकी शक्ति के लिए एक नकारात्मक प्रभाव डाल रही रही हैं। यही वजह है कि दुनिया के किसी भी देश के मुकाबले इस साल अमेरिका के प्रभाव में सबसे ज्यादा गिरावट दर्ज की गई है। राजनीतिक और कूटनीतिक स्तर पर अमेरिका विदेशी नीति के प्रभाव के पैमाने पर गिरकर 8वें स्थान पर पहुंच गया है। विदेश नीति के मामले में अमेरिका वियतनाम जैसे देशों से भी पिछड़ गया है, इसके बावजूद वो 80.5 अंक के साथ पहले पायदान पर बना हुआ है।

रायपुर में रोमांचक मुकाबला- दक्षिण अफ्रीका ने भारत को 4 विकेट से हराया, मार्करम की शतकीय पारी बनी जीत की नींव...

रायपुर के शहीद वीर नारायण सिंह इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए हाई-स्कोरिंग दूसरे वनडे में दक्षिण अफ्रीका ने भारत द्वारा दिए गए 359 रनों के लक्ष्य को 4 गेंद बाकी रहते हासिल कर लिया। इस मुकाबले में तीन खिलाड़ियों ने शतक जड़े – भारत के रुतुराज गायकवाड़ और विराट कोहली, जबकि दक्षिण अफ्रीका के लिए एडन मार्करम ने मैच जिताऊ पारी खेली। यह अफ्रीका के वनडे इतिहास में 350+ रन का तीसरा सफल चेज बना।

बड़ा स्कोर, बड़ा पीछा – रायपुर में रिकॉर्ड मुकाबला

भारत ने टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 5 विकेट पर 358 रन बनाए। रोहित शर्मा और यशस्वी जायसवाल की जोड़ी भले ही बड़ी साझेदारी न कर पाई, लेकिन रुतुराज गायकवाड़, विराट कोहली और कप्तान केएल राहुल ने पारी को मजबूत किया। गायकवाड़ ने 77 गेंदों में शानदार 105 रन बनाए और वनडे करियर का पहला शतक जड़ा। वहीं विराट कोहली ने अपनी क्लास दिखाते हुए 93 गेंदों में 102 रन बनाए, जो उनके वनडे करियर का 53वां शतक रहा। कप्तान केएल राहुल ने 43 गेंदों में 66 रन की तेजतर्रार पारी खेलकर भारत के स्कोर को 350 के पार पहुंचाया। दक्षिण अफ्रीका की ओर से मार्को जानसेन ने 2 विकेट हासिल किए, जबकि बर्गर और एनगिडी ने 1-1 सफलता ली।

दक्षिण अफ्रीका की पारी की शुरुआत क्विंटन डी कॉक और एडन मार्करम ने की, लेकिन डी कॉक को अर्शदीप सिंह ने मात्र 8 रन पर आउट कर भारत को शुरुआती सफलता दिलाई। कप्तान टेम्बा बावुमा भी अच्छी लय में दिखे लेकिन 45 रन पर प्रसिद्ध कृष्णा की गेंद पर हर्षित राणा को कैच थमा बैठे। वहीं दूसरी तरफ एडन मार्करम ने भारतीय गेंदबाजों पर दबाव बनाते हुए 98 गेंदों में 10 चौके और 4 छक्कों की मदद से 110 रन जड़े। उनकी पारी ने रनचेज की नींव रखी। मैथ्यू ब्रीट्जके ने 68 और डेवाल्ड ब्रेविस ने 54 रन जोड़कर मैच को अफ्रीका की ओर मोड़ दिया। अंतिम ओवरों में कॉर्बिन बॉश (29*) और केशव महाराज (10*) ने संयमित बल्लेबाजी करके टीम को 4 गेंद शेष रहते जीत तक पहुंचाया। यह वनडे में दक्षिण अफ्रीका की तीसरी सबसे सफल रनचेज बन गई।

रिकॉर्ड बुक में दर्ज हुआ मुकाबला, भारत के खिलाफ ज्वाइंट सबसे बड़ा चेज

359 रन का लक्ष्य दक्षिण अफ्रीका ने 49.2 ओवर में छह विकेट खोकर पूरा किया, जो भारत के खिलाफ किसी भी टीम द्वारा ज्वाइंट सबसे बड़ी सफल रनचेज है। इससे पहले 2019 में मोहाली में ऑस्ट्रेलिया ने इतने ही रनों का पीछा किया था। एडन मार्करम को उनकी निर्णायक शतकीय पारी के लिए 'प्लेयर ऑफ द मैच' चुना गया। भारत की ओर से तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह और प्रसिद्ध कृष्णा ने 2-2 विकेट चटकाए, जबकि हर्षित राणा को 1 सफलता मिली। हालांकि भारतीय गेंदबाज पूरे मैच के दौरान अफ्रीकी बल्लेबाजों को रोक पाने में संघर्ष करते दिखे। रायपुर का यह मुकाबला इस बात का सबूत बना कि सीमित ओवरों के क्रिकेट में 350+ का स्कोर भी आज सुरक्षित नहीं माना जा सकता। मुकाबले ने दोनों टीमों के बल्लेबाजों की दमदार प्रदर्शन को उजागर किया, वहीं गेंदबाजों के लिए यह मैच चुनौतीपूर्ण सिद्ध हुआ।

पहले दिन ही रणवीर सिंह की 'धुरंधर' ने मचाया धमाल, 28.60 करोड़ की ओपनिंग के साथ बनाया नया रिकॉर्ड...

रणवीर सिंह की नई फिल्म 'धुरंधर' ने बॉक्स ऑफिस पर ऐसा आगाज किया है, जिसने इंडस्ट्री में नई हलचल पैदा कर दी है। फिल्म ने रिलीज़ के पहले ही दिन 28.60 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया, जिसे मेकर्स ने आधिकारिक रूप से साझा किया है। यह ओपनिंग आंकड़ा न सिर्फ रणवीर के करियर के लिए बड़ी उपलब्धि है, बल्कि यह उन फिल्मों में शामिल हो गई है जिन्होंने स्टार के करियर में सबसे दमदार शुरुआत की।

रणवीर की पुरानी फिल्मों के ओपनिंग रिकॉर्ड भी पीछे छूटे

रणवीर सिंह की ब्लॉकबस्टर फिल्म 'पद्मावत' ने पहले दिन लगभग 24 करोड़ कमाए थे, जबकि रोहित शेट्टी की सुपरहिट 'सिंबा' ने 20.72 करोड़ रुपए की ओपनिंग दर्ज की थी। इन दोनों को पीछे छोड़ते हुए 'धुरंधर' ने पहले दिन की कमाई में नया मानदंड स्थापित किया है।

रणवीर सिंह की प्रमुख फिल्मों का कुल कलेक्शन

पद्मावत–	**302 करोड़**
सिंबा –	**240 करोड़**
बाजीराव मस्तान–	**183 करोड़**
रॉकी और रानी की प्रेम कहानी –	**153 करोड़**
गली बॉय –	**139 करोड़**

इन आंकड़ों से साफ है कि रणवीर सिंह का बॉक्स ऑफिस ग्राफ लगातार मजबूत होता जा रहा है और 'धुरंधर' का शानदार ओपनिंग डे इस ट्रेंड को और मजबूत कर रहा है।

सिर्फ रणवीर नहीं, कई बड़ी फिल्मों के रिकॉर्ड भी टूटे

'धुरंधर' ने न सिर्फ रणवीर की फिल्मों, बल्कि इस साल की अन्य बड़ी फिल्मों के ओपनिंग रिकॉर्ड को भी पीछे छोड़ दिया है।

सलमान खान की 'सिकंदर' ने पहले दिन 26 करोड़ कमाए थे।

अनीत पड्डा और अहान पांडे स्टारर 'सैयारा' ने पहले दिन 21 करोड़ की कमाई दर्ज की थी।

दोनों ही फिल्मों की तुलना में रणवीर की 'धुरंधर' ने मजबूत ओपनिंग लेकर बॉक्स ऑफिस पर टॉप स्पॉट हासिल कर लिया है।

'तेरे इश्क में' भी कर रही है स्थिर कमाई

इससे पहले रिलीज हुई फिल्म 'तेरे इश्क में' भी थिएटर्स में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। फिल्म ने 7 दिनों में 86 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया है। इसके बावजूद 'धुरंधर' की एंट्री ने पहले ही दिन बॉक्स ऑफिस की दिशा बदल दी है और अब वीकेंड कलेक्शन को लेकर दर्शकों और ट्रेड एनालिस्ट्स में उत्सुकता बढ़ गई है।

आगे क्या उम्मीदें हैं?

ट्रेड विशेषज्ञों का मानना है कि फिल्म की ओपनिंग ने इसे वीकेंड में 100 करोड़ की रेस में शामिल कर दिया है। अगर यही रफ्तार बनी रही तो 'धुरंधर' इस साल की सबसे बड़ी ग्रॉसर फिल्मों की सूची में जगह बना सकती है। दर्शकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया और रणवीर सिंह की स्टार पावर ने फिल्म को एक मजबूत शुरुआत दी है, जो आने वाले दिनों में और भी दिलचस्प कमाई दिखा सकती है।

RBI ने BSBD खातों के नए नियम जारी किए- छोटे खाताधारकों के लिए बड़ी राहत...

RBI ने BSBD (Basic Savings Bank Deposit) खातों के लिए नया फ्रेमवर्क जारी कर दिया है, जिसके तहत अनलिमिटेड डिपॉजिट, फ्री डिजिटल ट्रांजैक्शन, सालाना चेकबुक, मोबाइल-इंटरनेट बैंकिंग और ज्ञरूडेबिट कार्ड पर बिना शुल्क जैसी कई सुविधाएँ जोड़ दी गई हैं। ये सभी प्रावधान 1 अप्रैल 2026 से प्रभावी होंगे।

नए नियमों का उद्देश्य और प्रमुख बदलाव

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने BSBD खातों को ज्यादा सुविधाजनक बनाने के लिए विस्तृत नया फ्रेमवर्क लागू किया है, जिसका उद्देश्य कम आय वाले और छोटे सेविंग्स वाले खाताधारकों तक पूर्ण बैंकिंग पहुंच सुनिश्चित करना है। BSBD खाता एक जीरो-बैलेंस खाता होता है, जो उन लोगों के लिए बनाया गया था जिन्हें बेसिक बैंकिंग सेवाओं की जरूरत थी, लेकिन अब नए प्रावधानों के बाद यह खाता बड़ी सेविंग्स अकाउंट जैसी सुविधाएँ देने में सक्षम होगा।

नए नियमों के तहत BSBD खातों में अनलिमिटेड डिपॉजिट की अनुमति दी गई है। इसके साथ ही, ञ्जरूया डेबिट कार्ड के लिए न तो इश्यू फीस और न ही रिन्यूअल फीस ली जाएगी, जिससे ग्राहकों पर अनावश्यक शुल्कों का बोझ कम होगा। साल में कम से कम 25 पन्नों वाली चेकबुक देने का प्रावधान जोड़ा गया है, और इंटरनेट व मोबाइल बैंकिंग अब अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराई जाएगी। ग्राहकों को पासबुक या मासिक खाते का स्टेटमेंट लेने का विकल्प भी मिलेगा, जिससे रिकॉर्ड रखना और आसान हो जाएगा। एक बैंक अधिकारी के अनुसार, इन बदलावों से BSBD खाताधारकों को बड़े खातों जैसी सुविधा मिलेगी और बैंकिंग अब और ज्यादा सक्षम व आसान बनेगी।

विदड्रॉल, डिजिटल पेमेंट और ग्राहकों पर प्रभाव

निकासी नियमों में भी बड़ा संशोधन किया गया है। हर महीने कम से कम चार फ्री विदड्रॉल्स उपलब्ध रहेंगे, चाहे वह उसी बैंक के ATM से हों या इंटर-बैंक ATM से। खास बात यह है कि PI, IMPS, NEFT और RTGS जैसी डिजिटल ट्रांजैक्शन को निकासी के रूप में नहीं गिना जाएगा, यानी ग्राहक जितनी चाहे ऑनलाइन पेमेंट और ट्रांसफर कर सकते हैं, बिना फ्री विदड्रॉल लिमिट घटे। यह बदलाव डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा देगा और उपभोक्ताओं को बिना शुल्क के अधिकतम डिजिटल सुविधा मिलेगी। पुराने BSBD खाताधारक अगर नई सुविधाएँ लेना चाहते हैं, तो अपने बैंक से अनुरोध कर सकते हैं। वहीं जिन ग्राहकों के पास सामान्य सेविंग्स अकाउंट है, वे अपने खाते को BSBD खाते में बदलवा सकते हैं, लेकिन शर्त यह है कि उनके पास किसी अन्य बैंक में BSBD खाता न हो। एक वरिष्ठ बैंक मैनेजर का कहना है कि इस कदम से छोटे खाताधारकों को डिजिटल अर्थव्यवस्था में शामिल होने का और बड़ा मौका मिलेगा।

कब लागू होंगे नए प्रावधान और क्या होगा लाभ

RBI ने स्पष्ट किया है कि ये सभी नए नियम 1 अप्रैल 2026 से लागू होंगे, हालांकि बैंकों को यह स्वतंत्रता दी गई है कि वे चाहें तो इसे पहले भी लागू कर सकते हैं। इस बदलाव के बाद BSBD खाते अब सिर्फ 'बेसिक खाते' नहीं रहेंगे, बल्कि डिजिटल और फिजिकल दोनों प्रकार की उच्च स्तरीय सुविधाओं से लैस होंगे, जिससे कम आय वर्ग के लोग भी सुरक्षित और सुलभ बैंकिंग सेवाओं का फायदा उठा सकेंगे। यह कदम वित्तीय समावेशन की दिशा में एक बड़ा प्रयास माना जा रहा है। इन संशोधनों के साथ RBI ने यह सुनिश्चित किया है कि समाज का हर वर्ग बिना किसी बाधा के डिजिटल लेन-देन, बैंकिंग पहुंच और आवश्यक वित्तीय सेवाओं का लाभ उठा सके। BSBD खातों में यह सुधार भविष्य की बैंकिंग जरूरतों के अनुरूप है और छोटे बचतदारों को आर्थिक रूप से और अधिक सक्षम बनाने में मदद करेगा।

अब आयुष्मान कार्ड बनाना हुआ बेहद आसान- नया मोबाइल ऐप लॉन्च, घर बैठे पूरा होगा रजिस्ट्रेशन...

छत्तीसगढ़ में आयुष्मान कार्ड बनवाने की प्रक्रिया अब पूरी तरह डिजिटल और आसान। मोबाइल, आधार और ओटीपी से कुछ ही सेकंड में बनेगा कार्ड। दूर-दराज गांवों के लोगों, बुजुर्गों और व्यस्त परिवारों को मिलेगा बड़ा लाभ।

Aayushman Card App क्या है और क्यों जरूरी है?

छत्तीसगढ़ सरकार और नेशनल हेल्थ अथॉरिटी ने प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के लाभार्थियों के लिए बड़ा कदम उठाते हुए आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रक्रिया पूरी तरह सरल कर दी है। पहले जहां लोगों को जनसेवा केंद्रों के चक्कर काटने पड़ते थे या कई घंटे लाइन में खड़ा होना पड़ता था, अब वही काम कुछ मिनटों में मोबाइल ऐप की मदद से घर बैठे पूरा किया जा सकेगा। राज्य सरकार का लक्ष्य है कि योजना का लाभ हर पात्र परिवार तक पहुंचे ताकि कोई भी व्यक्ति इलाज के अभाव में पीड़ा न झेले। आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत पात्र परिवारों को हर वर्ष पाँच लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज मिलता है। यह योजना खासकर उन लोगों के लिए जीवनरक्षक साबित होती है जिनके लिए निजी अस्पतालों का खर्च उठाना मुश्किल होता है। नए ऐप के आने से यह सहायता और भी तेज़ व सहज तरीके से नागरिकों के हाथ तक पहुँच सकेगी।

कैसे घर बैठे बनेगा आयुष्मान कार्ड- पूरा रजिस्ट्रेशन प्रोसेस

नई सुविधा के तहत लोग अपने मोबाइल से ही आसानी से आयुष्मान कार्ड जनरेट कर सकते हैं। प्रक्रिया की शुरुआत पात्रता जांच से होती है, जिसके लिए लाभार्थी mera.pmjay.gov.in या PMJAY/Ayushman App पर जाकर अपना नाम, मोबाइल नंबर, आधार या राशन कार्ड के माध्यम से परिवार का विवरण देख सकते हैं। पात्र पाए जाने पर ऐप के जरिए आधार नंबर डालें, फिर आधार से जुड़े मोबाइल पर आने वाला ओटीपी डालकर अपनी पहचान का सत्यापन करें। इसके बाद मोबाइल कैमरे से फोटो कैप्चर की जाती है और कुछ ही सेकंड में कार्ड जनरेट होकर डाउनलोड के लिए उपलब्ध हो जाता है। अर्थ विशेषज्ञों के अनुसार, यह तकनीकी सुविधा न केवल समय की बचत करेगी बल्कि जनसेवा केंद्रों पर भीड़ घटाकर व्यवस्था को और अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाएगी। इस बदलाव पर स्वास्थ्य विभाग के एक अधिकारी ने कहा, सरकार की प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि हर नागरिक को आसानी से स्वास्थ्य सुरक्षा मिले, और नया ऐप इसी दिशा में एक मजबूत कदम है।

दूरदराज क्षेत्रों में बड़ी राहत, बुजुर्गों और महिलाओं के लिए वरदान

आयुष्मान कार्ड ऑनलाइन बनने की सुविधा राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से लाभकारी है, जहाँ परिवहन की दिक्कतें या समय की कमी के कारण लोग कार्ड बनवाने में असमर्थ रहते थे। नई व्यवस्था से अब गांवों में रहने वाले बुजुर्ग, महिलाएँ, खेतों में काम करने वाले मजदूर और छोटे दुकानदार बिना काम छोड़े कुछ ही मिनटों में कार्ड बना सकेंगे। इससे उन्हें अस्पतालों में मुफ्त और कैशलेस उपचार पाने में आसानी होगी। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि डिजिटल व्यवस्था बढ़ने से सरकारी schemes तक जनता की पहुँच तेज होगी और भ्रष्टाचार की संभावनाएँ भी कम होंगी। नागरिकों के अनुभव बताते हैं कि कई बार केंद्रों पर मशीन खराब होने या नेटवर्क न मिलने से कार्ड बनवाने में दिनों लग जाते थे, लेकिन अब मोबाइल ऐप इस परेशानी को खत्म कर देगा। एक महिला लाभार्थी ने कहा, पहले कई बार जाना पड़ता था, अब घर पर ही कार्ड बन गया — सच में बड़ी सुविधा मिली है। सरकार को उम्मीद है कि इस सुविधा से पात्र परिवारों का कवरेज बढ़ेगा और स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ अधिक प्रभावी तरीके से जरूरतमंदों तक पहुँचेगा।

इंडिगो फ्लाइट रद्द संकट- व्यवस्था, जनता और शासन—तीनों के लिए एक कठोर संकेत...

(जी.व्ही .एस.रुकमणि देवी)

इंडिगो द्वारा अचानक दर्जनों उड़ानों को रद्द किए जाने की घटना ने भारत की उभरती एविएशन व्यवस्था की सीमाओं को उजागर कर दिया है। हजारों यात्रियों की असुविधा, सूचना-प्रणाली की कमी, और सरकारी प्रतिक्रिया की धीमी गति—इन सबने यह प्रश्न सामने रखा है कि क्या हमारा हवाई परिवहन ढांचा उस तेजी से मजबूत हो रहा है, जिस तेजी से भारत की हवाई यात्रा बढ़ रही है?

भारत दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते हवाई बाज़ारों में शामिल हो चुका है, लेकिन इंडिगो की फ्लाइट रद्दीकरण की यह घटना बताती है कि विकास की गति और प्रबंधन की क्षमता में बड़ा अंतर बना हुआ है। जब देश की सबसे बड़ी एयरलाइन अचानक दर्जनों उड़ानें रोक देती है, तो यह केवल एक कंपनी की समस्या नहीं रहती—यह समूची व्यवस्था की विश्वसनीयता पर प्रश्न बन जाती है।

अचानक रद्द हुए परिचालन ने यह संकेत दिया कि एयरलाइंस के पास उपयुक्त बैकअप संसाधन नहीं थे, एयरपोर्ट सूचना तंत्र यात्रियों को समय पर अलर्ट देने में विफल रहा, और मंत्रालय की प्रतिक्रिया भी समय से नहीं पहुंची। विशेषज्ञों का कहना है कि भारत की एविएशन व्यवस्था अभी तक प्रोएक्टिव मैनेजमेंट की दिशा में पूरी तरह विकसित नहीं हो पाई है। जब संकट आता है, तब उसका समाधान खोजा जाता है–जबकि विकसित देशों में एयरलाइंस ऐसी स्थितियों को पहले से रोकने के लिए बाध्य होती हैं7

सवाल यह है कि क्या भारत अपनी तेजी से बढ़ती हवाई मांग के अनुरूप ढांचे का विकास कर पा रहा है? या हम एक ऐसी स्थिति की ओर बढ़ रहे हैं जहां सुविधाओं का विस्तार तो हो रहा है, पर उनकी विश्वसनीयता उतनी मजबूत नहीं हो पा रही?

इस पूरे संकट में सबसे अधिक प्रभावित वे यात्री रहे जिनके पास न विकल्प था, न स्पष्ट जानकारी। कई लोगों ने बताया कि वे एयरपोर्ट पर घंटों खड़े रहे, पर उन्हें यह तक नहीं बताया गया कि उड़ान रद्द क्यों हुई है। कहीं मुआवज़े की स्पष्टता नहीं, कहीं वैकल्पिक फ्लाइट की जानकारी नहीं, और कहीं काउंटर पर मौजूद स्टाफ के पास भी सही जवाब नहीं था।

यह स्थिति बताती है कि भारत में हवाई यात्रियों के अधिकारों का ढांचा अब भी अपर्याप्त है। यूरोप और अमेरिका जैसे क्षेत्रों में ऐसे मामलों में यात्रियों को स्वत: मुआवज़ा, होटल, भोजन और वैकल्पिक यात्रा उपलब्ध कराना एयरलाइंस के लिए अनिवार्य है। लेकिन भारत में यह व्यवस्था स्पष्ट नहीं है। एयरलाइन चाहें तो जिम्मेदारी निभाएं; चाहें तो औपचारिक दायरे तक सीमित रहें।

भारत के नागरिकों को हवाई यात्रा के दौरान गरिमा व अधिकार दोनों की आवश्यकता है—सिर्फ टिकट नहीं। यह तब और अधिक चिंताजनक हो जाता है जब किसी संकट में यात्रियों की दुर्गति को 'सामान्य स्थिति' की तरह स्वीकार कर लिया जाता है। यही वह मानसिकता है जिसे सुधारने की आवश्यकता है।

घटना के बाद राजनीतिक बयानबाजी तेज हो गई। विपक्ष ने सरकार पर आरोप लगाया कि एविएशन व्यवस्था अव्यवस्थित होती जा रही है और सरकार समय रहते निगरानी नहीं कर पा रही। दूसरी

ओर सरकार ने जांच के आदेश की घोषणा की। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या केवल जांच से समस्या का समाधान होगा?

भारत को अब एक ऐसी एविएशन नीति की आवश्यकता है जिसमें–

संकट की स्थिति में यात्रियों के अधिकार स्पष्ट हों, एयरलाइंस को समय पर सूचना देने और मुआवज़ा देने के लिए बाध्य किया जाए, मंत्रालय को निश्चित समय–सीमा में अपडेट देने का नियम हो, और बार–बार परिचालन अव्यवस्थित करने वाली कंपनियों पर दंडात्मक प्रावधान लागू हों। संसद और नीति–निर्माताओं से यही अपेक्षा है कि वे इस घटना को एक अवसर मानें—जहां सुधार केवल कागज़ पर नहीं, बल्कि वास्तविक तंत्र में दिखाई दें। भारत का लक्ष्य केवल एयर ट्रैफिक नंबर बढ़ाना नहीं होना चाहिए; लक्ष्य यह होना चाहिए कि हवाई यात्रा विश्वसनीय, सुरक्षित और यात्रियों के अधिकारों के अनुरूप हो।

इंडिगो फ्लाइट कैंसल संकट भारत के एविएशन क्षेत्र के लिए एक निर्णायक क्षण है। यह हमें बताता है कि सिस्टम में तेजी है पर संवेदनशीलता कम, विस्तार है पर जवाबदेही कम, और यात्रियों की संख्या बढ़ रही है पर उनकी प्राथमिकता कम दिखाई देती है।

यदि भारत को एक मजबूत, पारदर्शी और यात्रियों को केंद्र में रखने वाली हवाई व्यवस्था बनानी है, तो इस घटना को एक 'सिस्टम अलर्ट' की तरह लेना होगा—not just another news event. व्यवस्था को मजबूत किए बिना भारत का एविएशन भविष्य अधूरा रहेगा। यात्रियों की गरिमा, सुरक्षा और अधिकारों को सर्वोच्च स्थान मिलना ही चाहिए—यही एक सशक्त एविएशन राष्ट्र की पहचान होती है।

तुहर टोकन ऐप और 3100 समर्थन मूल्य से बढ़ा किसानों का आत्मविश्वास, मेहनत और तकनीक से नेतराम साहू बने प्रेरक चेहरा

खैरागढ़, छुई खदान, गंडई जिले के ग्राम खम्हारडीह के प्रगतिशील किसान नेतराम साहू इस वर्ष अपनी उत्कृष्ट खेती और बेहतर प्रबंधन के कारण पूरे क्षेत्र में चर्चा का विषय बने हुए हैं। पांडादाह धान खरीदी केंद्र में उन्होंने 77.60 क्विंटल धान बेचकर अपनी मेहनत का सम्मानजनक प्रतिफल हासिल किया। प्रति क्विंटल ?3100 समर्थन मूल्य मिलने से उनके परिवार में खुशी का माहौल है। नेतराम साहू का कहना है कि खेती में समय पर बोनी, खेत की नियमित देखभाल और उर्वरक का संतुलित उपयोग ही उनकी निरंतर बढ़ती पैदावार का कारण है। वे खेत को परिवार की तरह संभालते हैं और हर काम को नियमित रूप से करते हैं, जिससे उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इस वर्ष खरीदी प्रक्रिया उनके लिए और सरल हो गई जब उन्होंने 'तुहर टोकन' मोबाइल ऐप का उपयोग किया। ऐप से समय पर टोकन मिलने से न तो इंतजार करना पड़ा और न ही किसी भीड़ का सामना करना पड़ा। वे निर्धारित समय पर पहुँचकर आसानी से तौल करा सके। उनका कहना है कि यह व्यवस्था किसानों के समय और मेहनत दोनों की बचत करती है तथा खरीदी प्रक्रिया को पारदर्शी बनाती है।

नेतराम साहू ने मुख्यमंत्री को धन्यवाद देते हुए कहा कि समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी, खरीदी व्यवस्था का डिजिटलीकरण और किसानङ्कहितैषी नीतियों से किसानों का आत्मविश्वास बढ़ा है। उन्होंने बताया कि सरकार की योजनाओं का लाभ अब सीधे खेत और परिवार के जीवन में दिखाई देने लगा है। इसी केंद्र में ग्राम साल्हेवारा के किसान राजेश साहू ने भी 35.60 क्विंटल धान बेचकर समर्थन मूल्य का लाभ उठाया, जिससे अन्य किसानों में भी सकारात्मक ऊर्जा और उत्साह बढ़ा है।

अपने हर काम में परफेक्शन की तलाश एक निजी सोच है

एन. रघुरामन का कॉलम

आपको साउथ इंडियन रेस्तरां के वो 'डबरा' और 'टम्बलर' याद हैं, जिनमें फिल्टर कॉफी मिलती है? वही 'डबरा' घर पर मेरी पहली आइरनिंग क्लास के लिए इस्तेमाल किया गया सबसे जरूरी उपकरण था। शिक्षिका मेरी मां थीं। उन्होंने गर्म जलते कोयले से थोड़े भरे हुए 'डबरा' को संसी की मदद से पकड़ा था। यह हमारी कामचलाऊ इस्तरी थी। पापा को किसी जरूरी काम से बाहर जाना था और जब वो तैयार हो रहे थे, तब मां को उनकी कमीज पर कड़क इस्तरी करनी थी।

मैं उनका सहायक था। उन्होंने कॉलर से शुरू किया। फिर एक-एक कर आस्तीनों को इस्तरी किया, पूरी सावधानी से कि कहीं एक भी अतिरिक्त सिलवट न रह जाए। उसके बाद शर्ट की पीठ पर उसकी प्लीट को संभालते हुए। उन दिनों पिता के पास वही एक कमीज हुआ करती थी, जिसे मेरी मां के भाई विदेश से लाए थे और उसकी बैक के बीच में वह प्लीट थी।

फिर वे सामने के हिस्सों पर बारी-बारी से इस्तरी करतीं, जब तक कि शर्ट बहुत अच्छी तरह से आइरन की हुई नहीं दिखने लगती। पिता अपनी पतलून की क्रीज को लेकर भी बहुत सचेत रहते थे। पतलून में एक शार्प क्रीज उनके लिए बहुत जरूरी थी, उन लोगों के विपरीत जिनकी पतलून पर जगह-जगह सिलवटें दिखती थीं और जो खराब इस्तरी का नतीजा हुआ करती थीं।

हमारे घर में कभी कोई इस्तरी नहीं थी, न ही इस्तरी करने का कोई फैंसी बोर्ड था। इस्तरी करने के लिए हम हमेशा बरामदे की एक ऊंची सीढ़ी का उपयोग करते और उस पर कुछ दरी या चादरें ठीक से तह करके बिछा देते। घर में न खाने की मेज थी, न पढ़ने की। हर काम जमीन पर बैठकर ही किया जाता था। कभी-कभी मां मुझे अपने स्कूल की यूनिफॉर्म पर इस्तरी करने देतीं ताकि मैं इसे सीख सकूं।

लेकिन मेरे अनुभवहीन हाथ उस सिंगल क्रीज को हासिल करने के लिए जद्दोजहद करते रहते और मैं जल्दबाजी कर बैठता। तब वे मुझे दोबारा इस्तरी करके दिखातीं कि यह ठीक तरह से कैसे किया जाता है। लेकिन उस सिंगल क्रीज और कड़क इस्तरी की हुई कमीज का विचार मेरे भीतर बस गया था। कमीज के दो बटनों के बीच 'डबरा' चलाना तो एक कला थी, जिससे हाथ के कुशल उपयोग से सिलवटों को मिटा दिया जाता।

कमीज के उस सामने वाले हिस्से पर इस्तरी करना आसान था, जहां बटन होल होते थे। इसकी तुलना में बटन वाले हिस्से पर काम करना कठिन था। उस हल्की नीली कमीज के हर बटन के आसपास 'डबरा' को धीमे, सुनियोजित ढंग से चलाना और कमीज को एकदम साफ, क्रिस्पी रूप देने का वह हुनर भी मेरे मन में बसा रहा।मैं हमेशा सोचता था कि जब कमीज के बटन लगाने पर वह हिस्सा फिर से सिलवटों से भर जाने वाला है, तो उसे इतनी मेहनत से इस्तरी करने की क्या जरूरत है।

लेकिन मेरे माता-पिता के लिए परफेक्शन एक निजी सोच थी। मां अच्छी तरह से इस्तरी की हुई सूती साड़ी पहनती थीं और उसकी प्लीट्स इतनी सटीक होती थीं कि अगर उन्हें स्केल से नापा जाए तो सभी बिल्कुल एक समान निकलें। साड़ी की सीधी खड़ी प्लीट और पिता की कमीज में कंधे से कोहनी तक की सटीक क्रीज- ये विवरण आज भी कुछ पुराने फोटो में दर्ज हैं और उन्हें मैं बार-बार निहारता रहता हूं।

यह स्टाइल न केवल उन्हें गर्व से भरती, बल्कि यह उनके चेहरों पर तब मुस्कराहट भी ले आती, जब सड़कों पर कोई उन पर नजरें टिका देता था। अगर पिता के लिए पतलून और कमीज की एकदम सीधी क्रीज के साथ चमचमाते हुए जूते आवश्यक थे तो मां हल्के रंग की सूती साड़ी को सलीके से पहनना पसंद करती थीं और पाउडर लगे चेहरे पर कुंकुम की गोल बिंदी बनाती थीं। वे रेडीमेड बिंदी का इस्तेमाल नहीं करती थीं। उन्होंने मुझे यह सिखाया कि जीवन में जो भी करो, उसे अच्छे से अच्छे तरीके से करने की कोशिश करो।

फंडा यह है कि जब हम कोई काम कर रहे हों तो उपकरणों के अभाव की शिकायत करना मूर्खता है। उसे अपने हिसाब से पूरा करें। तब आपको एक ऐसे संतोष का एहसास होगा, जिसे आप दूसरों को बयान नहीं कर सकते। लेकिन हमारी स्टाइल लोगों की निगाहों को अपनी तरफ खींचती है और धीरे-धीरे हमें उनके दिमाग में एक ब्रांड बना देती हैं।

चायवाले की चैंपियन बेटी अंजली- थाईलैंड में रजत जीतकर अंबाला को किया गौरवान्वित...

आलेख-राखी श्रीवास्तव

अंबाला की लाल कुर्ती कॉलोनी में रहने वाली 11 साल की उम्र में हैंडबॉल शुरू करने वाली अंजली ने तमाम आर्थिक चुनौतियों को पार करते हुए थाईलैंड में आयोजित इंटरनेशनल जूनियर हैंडबॉल चैंपियनशिप में रजत पदक जीता। चाय की दुकान पर काम करने वाले पिता की बेटी आज पूरे हरियाणा और भारत के लिए प्रेरणादायक उदाहरण बन चुकी है।

संघर्षों के बीच पला बड़ा सपना

अंजली का जीवन किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं। उसके पिता राजकुमार पिछले 20 वर्षों से अंबाला के एक छोटे से टी-स्टॉल पर काम करते हैं। मूल रूप से बिहार के मधुबनी जिले के रहने वाले राजकुमार रोज़मर्रा की जरूरतें पूरी करने में ही संघर्ष करते रहे, लेकिन बेटी की पढ़ाई और खेल पर कभी समझौता नहीं किया। लाल कुर्ती कॉलोनी के किराए के घर में पली-बढ़ी अंजली तीन भाई-बहनों में सबसे बड़ी है और बचपन से ही खेलों में रुचि रखती थी। 11 साल की उम्र में उसने हैंडबॉल खेलना शुरू किया और धीरे-धीरे उसकी मेहनत ने उसे जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।

अलीगढ़ कैंप से शुरू हुआ अंतरराष्ट्रीय सफर

अंजली की खेल यात्रा में बड़ा मोड़ तब आया जब उसका चयन उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में लगे विशेष ट्रेनिंग कैंप के लिए हुआ। यहां उसने एक महीने की कठोर प्रैक्टिस की। कोचों ने उसके खेल में अनुशासन, स्फूर्ति और समझ देखकर उसे टीम इंडिया के लिए चुन लिया। गुजरात में आयोजित साई इंटरनेशनल कैंप में पहले मिले प्रशिक्षण ने उसके खेल को और भी संवारा और यही निखार आगे चलकर उसे अंतरराष्ट्रीय मंच तक ले गया।

थाईलैंड में चमकी प्रतिभा, मिली सिल्वर जीत

थाईलैंड में आयोजित इंटरनेशनल जूनियर हैंडबॉल चैंपियनशिप में नौ देशों की टीमें हिस्सा लेने पहुंची थीं। भारतीय टीम ने बेहतरीन प्रदर्शन किया और फाइनल मुकाबले में जगह बनाई, जहां उसका सामना उज़्बेकिस्तान से हुआ। कड़ी टक्कर के बाद भारत को रजत पदक मिला। हालांकि गोल्ड से चूक का थोड़ा अफसोस रहा, लेकिन अंजली के चेहरे पर चमक थी। उसने कहा, यह तो सिर्फ शुरुआत है। अगली बार गोल्ड मेडल लेकर भारत का तिरंगा सबसे ऊपर ले जाना है।

टी-स्टॉल से उठी उम्मीद, मालिक भी हुए भावुक

जिस चाय की दुकान पर अंजली के पिता राजकुमार काम करते हैं, उसके मालिक रिंकू कुमार ने भी इस उपलब्धि पर खुशी जताई। उन्होंने कहा कि हमारी दुकान पर काम करने वाले राजकुमार की बेटी ने दुनिया में भारत का नाम रोशन कर दिया। यह गर्व की बात है। हमें पूरी उम्मीद है कि अंजली आगे भी देश के लिए बड़ा करेगी।卐 रिंकू बताते हैं कि राजकुमार पिछले दो दशकों से दुकान पर काम कर रहे हैं और अब तो परिवार जैसा हिस्सा बन चुके हैं।

अंजली को मिला कैबिनेट मंत्री का आशीर्वाद

रजत पदक जीतने के बाद अंजली अपने माता-पिता के साथ हरियाणा के कैबिनेट मंत्री अनिल विज से मिलीं। मंत्री ने अंजली को आशीर्वाद देते हुए कहा, अंजली का जज़्बा और सफर हर युवा खिलाड़ी के लिए प्रेरणा है। ऐसी प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना जरूरी है। अंजली के माता-पिता ने सरकार से अपील की है कि बेटी की प्रतिभा को देखते हुए उसे नौकरी या आर्थिक सहायता दी जाए ताकि वह बिना चिंता के अपने खेल को और ऊंचाइयों तक ले जा सके।

लाल कुर्ती कॉलोनी की उम्मीद बनी अंजली

अंजली की सफलता ने लाल कुर्ती कॉलोनी में उत्सव जैसा माहौल बना दिया है। लोग उसे क्षेत्र की बेटी कहकर सम्मान दे रहे हैं। पढ़ाई और खेल, दोनों को संतुलन से संभालने वाली अंजली वर्तमान में अंबाला के एसडी कॉलेज से बीए पार्ट-2 कर रही है। उसके लिए यह सिर्फ खेल नहीं, बल्कि जीवन का बड़ा लक्ष्य है—भारत को विश्व स्तर पर मजबूत पहचान दिलाना।

प्रदूषित हवा के चलते कौन सी गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं ?

दिल्ली में बढ़ता एयर पॉल्यूशन अब सिर्फ एक पर्यावरणीय समस्या नहीं रहा, बल्कि सीधे-सीधे जनस्वास्थ्य का बड़ा संकट बन चुका है। पिछले कुछ हफ्तों से हवा की गुणवत्ता खतरनाक स्तर पर टिकी हुई है और क्लाउड-सीडिंग के असफल रह जाने के बाद हालात और बिगड़ गए हैं। शु वार सुबह रिकॉर्ड किया गया AQI 455 यह दिखाता है कि हवा कितनी ज़हरीली हो चुकी है–विशेषज्ञों के मुताबिक यह एक दिन में लगभग 11 सिगरेट पीने जितना नुकसान शरीर को पहुंचा सकती है। ऐसी हवा के लगातार संपर्क में रहने से सांस लेना तक भारी हो जाता है और आंखों में जलन, गले में खराश, सिरदर्द और थकान जैसी समस्याएं बढ़ जाती हैं। सरकार ने स्वास्थ्य सलाह जारी करते हुए लोगों से कहा है कि वे बिना ज़रूरत घर के बाहर न निकलें, और अगर बाहर जाना जरूरी हो तो हमेशा N-95 मास्क का उपयोग करें। डॉक्टरों का कहना है कि बच्चों और बुज़ुर्गों को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए क्योंकि उनका इम्यून सिस्टम अधिक संवेदनशील होता है। एक स्थानीय नागरिक ने बताया कि सुबह-सुबह घर का दरवाज़ा खोलते ही धुएं की परत महसूस होती है, जिससे सामान्य दिनचर्या प्रभावित हो रही है। जॉगिंग, रनिंग और योग जैसी आउटडोर गतिविधियां इस मौसम में शरीर पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं, इसलिए इन्हें टाला जाना चाहिए। गृहस्थ स्तर पर एयर प्यूरीफायर का उपयोग, घर में पौधे लगाने और हवा का नियंत्रित वेंटिलेशन बनाए रखना कुछ ऐसे उपाय हैं जिनसे इस प्रदूषण की मार थोड़ी कम की जा सकती है।

एयर पॉल्यूशन असल में कई गैसों, रसायनों और सूक्ष्म कणों के मिश्रण से बनता है, जो हवा में इस मात्रा में मौजूद हो जाते हैं कि शरीर के अंदर जाकर बीमारी पैदा कर देते हैं। WHO की मानें तो हवा में मौजूद छोटे-छोटे पार्टिकुलेट मैटर (PM2.5 और PM10), नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड और ओजोन जैसे प्रदूषक सबसे घातक माने जाते हैं। इनका आकार इतना छोटा होता है कि ये सांस के जरिए सीधे फेफड़ों में पहुंचकर रक्तप्रवाह में घुस जाते हैं और पूरे शरीर में सूजन, ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और सेल्स को नुकसान पहुंचाने वाली प्रतिक्रियाएं शुरू कर देते हैं। यही वजह है कि प्रदूषण का असर सिर्फ फेफड़ों पर नहीं, बल्कि दिल, दिमाग, किडनी, त्वचा और यहां तक कि आंखों और नसों तक पर पड़ता है। WHO की रिपोर्टों में बताया गया है कि नियमित रूप से प्रदूषित हवा में रहने से स्ट्रोक, हार्ट अटैक, अस्थमा, COPD, लंग कैंसर, अल्ज़ाइमर और पार्किंसंस जैसी बीमारी का जोखिम कई गुना बढ़ जाता है। गर्भवती महिलाओं के लिए यह स्थिति और भी खतरनाक है क्योंकि प्रदूषण गर्भस्थ शिशु के विकास को प्रभावित करता है, जिससे समय से पहले प्रसव, कम वजन और अन्य जटिलताओं की संभावना बढ़ सकती है। बच्चे इस प्रदूषण के सबसे बड़े शिकार बनते हैं क्योंकि उनका श्वसन तंत्र अभी विकसित हो रहा होता है और हवा में मौजूद ज़हरीले कण इसे आसानी से नुकसान पहुंचा सकते हैं। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि लगातार खराब हवा में रहने से शरीर की प्राकृतिक प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है, जिससे सामान्य संक्रमण भी गंभीर रूप ले सकते हैं।

ऐसी स्थिति में सिर्फ सरकार या किसी संस्था पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत स्तर पर भी जागरूकता बेहद जरूरी है। लोग रोजाना एयर-क्वालिटी इंडेक्स चेक करें और अगर ध्द्ध बहुत खराब श्रेणी में हो, तो बाहरी गतिविधियों से बचें। घर के अंदर एयर-क्वालिटी बेहतर रखने के लिए एयर प्यूरीफायर का उपयोग किया जा सकता है, और यदि यह संभव न हो तो खिड़कियों को केवल उन घंटों में खोला जाना चाहिए जब प्रदूषण अपेक्षाकृत कम हो। बाहर निकलते समय ह-95 या उससे बेहतर फिल्ट्रेशन वाला मास्क पहनना सबसे प्रभावी उपायों में से एक है, क्योंकि आम कपड़े के या सर्जिकल मास्क इस तरह के सूक्ष्म कणों को रोकने में सक्षम नहीं होते। कारपूलिंग, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग और अनावश्यक वाहनों से बचना भी प्रदूषण कम करने में सहयोग करता है। पौधे लगाना सिर्फ पर्यावरण के लिए ही नहीं बल्कि घर की हवा को शुद्ध करने में भी मददगार होता है। साथ ही, एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर भोजन—जैसे ताजे फल, सब्जियां, अखरोट और बीज—शरीर को प्रदूषण के प्रभावों से लड़ने में थोड़ी रक्षा प्रदान करते हैं। यह सच है कि प्रदूषण पूरी तरह खत्म करना एक लंबी लड़ाई है, लेकिन छोटे-छोटे कदम, सामूहिक प्रयास और व्यक्तिगत सावधानी मिलकर इस संकट से लड़ने में बहुत मदद कर सकते हैं। दिल्ली की हवा वर्तमान में भले ही चुनौतीपूर्ण हो, लेकिन जागरूकता, वैज्ञानिक जानकारी और सतर्क व्यवहार से हम अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित रख सकते हैं और भविष्य के लिए थोड़ा स्वच्छ वातावरण तैयार कर सकते हैं।

सर्दियों का सुखद आगमन स्वाद, एहसास और जीवन में नई ऊर्जा का मौसम...

सर्दियां हर साल अपने साथ एक अनोखी ताजगी, आल्हाद और जीवन में मिठास लेकर आती हैं। ठंडी हवा का हल्का स्पर्श चेहरे को तरोताजा कर देता है, तो दूसरी ओर सुबह की गुनगुनी धूप तनङ्कमन को ऐसे संतुलित करती है, जैसे प्रकृति स्वयं हमें मुस्कुराने का निमंत्रण दे रही हो। दीपावली की जगमगाहट जब देव दीपावली में बदलते हुए विदा होती है, तो सर्दी का मौसम अपने पूरे सौंदर्य और शांति के साथ दस्तक देता है। यह वही समय होता है जब कार्तिक अपने रंग छोड़ता है और अगहन अपनी कांति से भरपूर प्राकृतिक खूबसूरती को सामने लाता है। श्रीमद्?भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने मार्गशीर्ष माह को अपना प्रिय महीना कहा है और इस ऋतु की आध्यात्मिक अनुभूति इसी से समझी जा सकती है।

जादुई सुबहें और सर्दियों की मनमोहक तस्वीरें

जाड़े की पहली लहर ही हमें रज़ाई में दुबक जाने के लिए मजबूर कर देती है। सुबह जब कोई प्रेम से कह दे—अदरक वाली गर्म चाय तैयार है!—तो जैसे सर्दी का पूरा आनंद पूरा हो जाता है। साथ में पकौड़ों की भाप उड़ती प्लेट हो तो यह आनंद स्वर्गिक लगने लगता है। बाहर निकलो तो विदा होता चांद मुस्कराता है, और धुंध से घिरे बागीचे में गेंदा, गुलदाउदी और डहलिया हवा में अपनी खुशबू मिलाते दिखाई देते हैं। हल्की रोशनी में हरी धरती ओस की बूंदों से चमकती है, मानो प्रकृति ने खुद मोतियों की सजावट कर दी हो।

यह वही मौसम है जिसके बारे में धर्मवीर भारती भी लिख गए— जाड़े की हल्की बासंती दोपहरी ने ज़रतार धूप की चुनरी में मुंह छिपा लियाज।

खाने-पहनने का असली मज़ा सर्दियों में

सर्दियों में खाने और पहनने का आनंद किसी भी अन्य मौसम से ज्यादा होता है। स्वेटर, शॉल और जैकेट का सुख सिर्फ शरीर को नहीं, दिल को भी गर्माहट देता है। वैज्ञानिक बताते हैं कि ठंड में शरीर अधिक ऊर्जा मांगता है, इसलिए भूख ज्यादा लगती है। धूप कम मिलने से सेरोटोनिन का स्तर भी घटता है, जिससे लोग स्वाभाविक रूप से 'कंफर्ट फूड' की ओर आकर्षित होते हैं।

प्रकृति भी इस समय उदार होती है—हरी सब्जियां पोषण से भरपूर होती हैं फल एंटी ऑक्सीडेंट और विटामिन से लबरेज होते हैं गाजर का हलवा हो या मूंगफली-गुड़—हर चीज़ का स्वाद कई गुना बढ़ जाता है . यह वही ऋतु है जब साधारण गुड़ भी एक अनोखी मिठाई जैसा लगता है।

धूप और रिश्तों की गर्माहट–दोनों का अनोखा संगम

सर्दियों में हल्की उदासी का कारण वैज्ञानिक रूप से धूप की कमी भी माना जाता है, लेकिन यही मौसम रिश्तों की गर्मजोशी को सबसे खूबसूरत तरीके से सामने लाता है। गांवों में अलाव और शहरों में हीटर के चारों ओर परिवार का एक साथ बैठना—यह दृश्य किसी भी फिल्म से कम नहीं होता।

अलाव की रोशनी, बुजुर्गों की कहानियां, बच्चों की खिलखिलाहट और गर्म चाय का स्वाद—ऐसे क्षण सिर्फ यादें नहीं बनते, बल्कि रिश्तों को और मजबूत करते हैं।

प्रकृति के संग तालमेल—सर्दियां बनें सेहत और सकारात्मकता का मौसम

यदि इस मौसम के साथ ताल मिलाया जाए, तो यह ऋतु हमारे जीवन में नई ऊर्जा भर देती है।

ठंड का मौसम नई शुरुआत के लिए उत्तम माना जाता है। कोई नया काम सीखना हो तो यही सही समय है।

मौसमी फल और सब्जियां सेहत को संतुलित रखने में बेहद मददगार होती हैं।

रातें लंबी होने से जल्दी भोजन कर समय पर सोना आसान हो जाता है।

रोज कुछ समय धूप में बिताना विटामिनङ्कडी और 'फीलङ्कगुड' हार्मोन दोनों देता है।

ऊर्जा अधिक महसूस होने से व्यायाम—चाहे वॉक हो या खेल— बेहद लाभकारी रहता है।

और सबसे जरूरी—चाय की चुस्कियों के साथ अपनों से मिलना। यही वह समय है जब रिश्तों में नई मिठास घुलती है।

सर्दियां केवल एक ऋतु नहीं, बल्कि जीवन को नए स्वाद, नई शुरुआत और नई ऊर्जा से भर देने वाला मौसम है। प्रकृति का यह खूबसूरत उपहार शरीर, मन और आत्मा तीनों को संतुलित करता है। इसलिए इस मौसम को महसूस कीजिए, जी भरकर इसका आनंद लीजिए और इसे अपने रिश्तों, स्वास्थ्य और जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का मौसम बनाइए।

बिहार चुनाव में हार पर पहली बार बोले तेजस्वी यादव, लोग चाहते थे बने हमारी सरकार, मुख्यमंत्री बन गए नीतीश कुमार...

बिहार की राजनीति एक बार फिर उस मोड़ पर खड़ी दिखती है जहां चुनावी नतीजों से अधिक उन नतीजों की विश्वसनीयता और संदेश पर चर्चा तेज हो जाती है। विधानसभा चुनाव में मिली करारी हार के बाद नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव पहली बार मीडिया के सामने आए और उन्होंने जिस बेबाकी से अपनी बात रखी, उसने बिहार की राजनीति में नए सवाल पैदा कर दिए हैं। उनकी यह टिप्पणी कि एनडीए की जीत नहीं, लोकतंत्र की हार हुई है सिर्फ एक राजनीतिक बयान नहीं बल्कि चुनावी प्रणाली पर उठते अविश्वास की गूंज लगती है।

उन्होंने दावा किया कि जनता बदलाव चाहती थी, उनकी सरकार चाहती थी लेकिन परिणामों में कुछ और दिखा। लालू प्रसाद यादव की पार्टी आरजेडी, जिसने एक समय बिहार की सबसे बड़ी राजनीतिक ताकत के रूप में एक लंबा सफर तय किया था, आज महज 25 सीटों पर सिमट गई है और तेजस्वी एक बार फिर विपक्ष के नेता की भूमिका में लौट आए हैं। लेकिन असल प्रश्न यह है कि तेजस्वी की हार राजनीतिक है या बिहार की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से उपजी निराशा की प्रतिक्रिया? तेजस्वी यादव बार-बार यह कहते रहे कि बेरोजगारी चुनाव का सबसे बड़ा मुद्दा था। उन्होंने अपनी सरकार की परिकल्पना पढ़ाई, कमाई, दवाई, सिंचाई, सुनवाई और कार्रवाई के छह स्तंभों पर रखी थी। लेकिन जनता तक उनका संदेश कितना गहराई तक पहुंचा, यह अब सवालों के घेरे में है। तेजस्वी ने नीतीश कुमार पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि 20 साल तक सत्ता में रहने के बावजूद वे एक चीनी मिल तक चालू नहीं करा पाए। यह आरोप सिर्फ प्रशासनिक असफलता पर नहीं, बल्कि राज्य की जड़ होती औद्योगिक व्यवस्था पर भी टिप्पणी है।

चुनाव आयोग पर उनकी नाराज़गी और यह सवाल कि आचार संहिता से 10 दिन पहले कैसे 10-10 हजार रुपये बांटे गए, कहीं न कहीं चुनावी निष्पक्षता की बहस को फिर जिंदा कर देता है। तेजस्वी का बड़ा दावा यह भी है कि कई सीटों पर वे 1,000 से कम वोटों से हारे और एनडीए व महागठबंधन के बीच कुल अंतर सिर्फ 12,000 वोट का था। यदि यह आंकड़ा सही है तो यह सवाल सहज उठता है कि जनमत की दिशा इतनी करीबी होने के बावजूद नतीजों ने इतना असंतुलन कैसे पैदा कर दिया? बिहार की राजनीतिक जमीन हमेशा से संवेदनशील, जटिल और जनभावनाओं से भरी रही है। यहां बेरोजगारी

बिहार आज भी बेरोजगारी, पलायन, गरीबी जैसी समस्याओं से जूझ रहा है और तेजस्वी का यह कहना कि बिहार सबसे गरीब राज्य है, सबसे ज्यादा युवा है लेकिन उद्योग नहीं हैं प्रदेश की सच्चाई को और स्पष्ट करता है। कपिल सिब्बल के शो में तेजस्वी ने अपनी हार को हजम न होने वाली बात बताया और कहा कि यह सवाल सिर्फ उनसे नहीं बल्कि बिहार की जनता से भी पूछा जाना चाहिए। 75 से 25 सीटों पर आ जाना किसी भी दल के लिए बड़ा झटका है, लेकिन तेजस्वी का आरोप कि एनडीए ने घूस देकर चुनाव जीता, मतदान से पहले 40 हजार करोड़ रुपये बांट दिए गए-यह आरोप राजनीतिक प्रणाली की नींव तक सवाल खड़े करता है।

सिर्फ एक मुद्दा नहीं, बल्कि युवाओं के भविष्य की लड़ाई बन चुका है। पिछले दो दशक की सरकारों पर तेजस्वी के आरोप, चाहे राजनीतिक हों या तथ्यात्मक, यह जरूर बताते हैं कि बदलाव की इच्छा जनता में थी—और इस भावना को उन्होंने एक हद तक कैद भी किया। मगर सवाल यह है कि क्या उन्होंने उस राजनीतिक भरोसे को मतों में बदलने की तैयारी की थी? या विपक्ष के बिखराव, अंतर्विरोध और चुनावी प्रबंधन की कमजोरियों ने उनकी रणनीति को कमजोर कर दिया? तेजस्वी यादव का यह कहना कि बीजेपी, जेडीयू के कई विधायक भी अपनी जीत पर भरोसा नहीं कर पा रहे हैं, भले ही राजनीतिक रूप से उत्तेजक बयान हो, लेकिन यह राज्य में मतदाताओं की मनोदशा और चुनावी प्रक्रिया पर अविश्वास का संकेत भी देता है। बिहार की राजनीति अब ऐसे मोड़ पर है जहां नतीजों से आगे बढ़कर जनता यह समझना चाहती है कि उनकी आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व कौन करेगा। तेजस्वी यादव ने बेरोजगारी, उद्योगहीनता, स्वास्थ्य-शिक्षा के सवालों को चुनावी विमर्श में लाने की कोशिश की, लेकिन नतीजे बताते हैं कि यह विमर्श लोगों के वोट के रूप में तब्दील नहीं हो सका। अब सवाल यह है कि क्या यह हार महागठबंधन की रणनीति की कमजोरी है, या फिर राजनीतिक समीकरणों की वह गणित जिसे आम जनता आज भी समझने में असमर्थ है? लोकतंत्र में चुनाव सिर्फ जीत-हार का खेल नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने का माध्यम है। तेजस्वी यादव की नाराज़गी, आरोप और आत्ममंथन यह संकेत देते हैं कि बिहार की राजनीति आने वाले वर्षों में और तीखी, और गहरी बहसों से गुज़रेगी। चुनाव बीत चुका है, लेकिन बिहार के मुद्दे आज भी वहीं खड़े हैं—और यही सबसे बड़ी चुनौती है।

रूस-भारत रिश्तों में नई गति- पुतिन की यात्रा में 16 समझौतों ने खोले रणनीतिक सहयोग के नए दरवाज़े ...

भारत और रूस के बीच दशकों पुराने सामरिक रिश्तों को नई ऊंचाई देने के उद्देश्य से राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की भारत यात्रा अत्यंत सफल और ऐतिहासिक साबित हुई, जहां दोनों देशों ने कुल 16 महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए। ये समझौते न केवल दोनों राष्ट्रों के राजनीतिक और आर्थिक सहयोग को मजबूती देंगे बल्कि सामाजिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य, श्रमिक, समुद्री तथा मीडिया क्षेत्रों में भी दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ेंगे। यात्रा के दौरान प्रवासी मामलों, स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, समुद्री प्रशिक्षण, सीमा शुल्क डेटा साझेदारी, उर्वरक आपूर्ति, शैक्षणिक अनुसंधान और मीडिया सहयोग से जुड़े समझौतों ने द्विपक्षीय संबंधों को व्यापक स्वरूप प्रदान किया। भारत-रूस के बीच प्रवासी और श्रमिक गतिशीलता से संबंधित समझौता विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि इसके तहत दोनों देशों के नागरिक अब परस्पर अस्थायी श्रम गतिविधियों में सम्मिलित हो सकेंगे। यह व्यवस्था उन क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाएगी जहां कुशल और अर्ध-कुशल मानव संसाधन की आवश्यकता है। इसके साथ ही यह करार अनियमित प्रवासियों से जुड़े मामलों में पारस्परिक सहयोग को भी मजबूत करेगा, जिससे प्रशासनिक प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ेगी। विशेषज्ञों के अनुसार इस समझौते से न केवल रोजगार के अवसरों का विस्तार होगा, बल्कि दोनों देशों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक संबंध भी और अधिक गहरे होंगे। स्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा जैसे संवेदनशील क्षेत्रों को भी इस यात्रा में विशेष प्राथमिकता दी गई।

स्वास्थ्य अनुसंधान, चिकित्सा शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और विज्ञान के क्षेत्र में सहयोग के उद्देश्य से हुए समझौतों से दोनों देशों की स्वास्थ्य प्रणालियों में नवाचार और संसाधन साझा करने की संभावनाएँ बढ़ेंगी। खाद्य सुरक्षा निगरानी, उपभोक्ता अधिकार संरक्षण और खाद्य गुणवत्ता मानकों पर रूस की संघीय सेवा और भारत के संबंधित प्राधिकरणों के बीच हुए करार से नागरिकों के स्वास्थ्य सुरक्षा ढांचे को मजबूती मिलेगी। समुद्री क्षेत्र में सहयोग के लिए भारत के बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय तथा रूस के परिवहन मंत्रालय ने ध्रुवीय जल क्षेत्रों में संचालित होने वाले जहाजों के संचालन और प्रशिक्षण से संबंधित समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह सहयोग भारत के समुद्री प्रशिक्षण ढांचे को नई दिशा देगा और भविष्य के नौवहन विशेषज्ञों को अंतरराष्ट्रीय स्तर का अनुभव उपलब्ध कराएगा। उर्वरक क्षेत्र में हुए समझौते भारत की कृषि अर्थव्यवस्था के लिए महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि रूस लंबे समय से भारत के प्रमुख उर्वरक आपूर्तिकर्ताओं में शामिल रहा है। सीमा शुल्क और वाणिज्यिक सहयोग को बेहतर बनाने के लिए दोनों देशों ने माल और वाहनों से संबंधित पूर्व-आगमन सूचना साझा करने पर सहमति बनाई है। इससे व्यापार प्रक्रियाओं में तेजी, लागत में कमी और लॉजिस्टिक दक्षता में सुधार देखने को मिलेगा। शैक्षणिक जगत के लिए भी यह यात्रा महत्वपूर्ण रही।

पुणे स्थित उन्नत प्रौद्योगिकी रक्षा संस्थान और रूस की प्रतिष्ठित नेशनल टॉम्स्क स्टेट यूनिवर्सिटी के बीच वैज्ञानिक व अकादमिक अनुसंधान सहयोग का करार दोनों देशों के छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए नए अवसर खोलेगा। कला, संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत संरक्षण से जुड़े संगठनों के बीच हुए करारों ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान की भूमिका को और मजबूत किया। मीडिया क्षेत्र में सहयोग के लिए प्रसार भारती और रूस की गज़्प्रोम-मीडिया, बिग एशिया मीडिया समूह तथा एएनओ टीवी-नोवोस्ती के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे प्रसारण तकनीक, सामग्री विनिमय और मीडिया अनुसंधान में नई संभावनाएँ खुलेंगी। उच्चस्तरीय वार्ताओं में राष्ट्रपति पुतिन और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कई प्रमुख घोषणाएँ कीं, जिनमें 2030 तक रणनीतिक आर्थिक सहयोग कार्यक्रम तैयार करने की सहमति सबसे महत्वपूर्ण रही। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ऊर्जा, विज्ञान, तकनीक, उद्योग, कृषि और रक्षा क्षेत्रों में दीर्घकालिक साझेदारी को नई दिशा देना है।

रूस के इंटरनेशनल बिग कैट अलायंस में शामिल होने के लिए फ्रेमवर्क समझौते को अपनाना वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में एक मजबूत कदम है, जो विशेष रूप से बाघ और अन्य बड़े बिल्ली प्रजातियों की सुरक्षा हेतु वैश्विक प्रयासों को बढ़ावा देगा। पर्यटन के प्रोत्साहन के तहत भारतीय सरकार ने रूसी नागरिकों को निःशुल्क आधार पर 30 दिनों का ई-पर्यटक वीजा देने की घोषणा की है, साथ ही रूसी समूह पर्यटकों के लिए भी निःशुल्क समूह वीजा उपलब्ध कराया जाएगा। विशेषज्ञ मानते हैं कि इससे भारत में रूसी पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। कुल मिलाकर, पुतिन की इस यात्रा में हुए 16 समझौतों और उच्च-स्तरीय घोषणाओं ने भारत-रूस संबंधों को नई दिशा और मजबूती प्रदान की है। यह यात्रा न केवल राजनीतिक और आर्थिक साझेदारी को पुनर्परिभाषित करती है बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और मानव विकास के क्षेत्रों में भी व्यापक संभावनाएँ खोलती है।

दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र- एक ऐसा सितारा जिसकी रोशनी हमेशा बरकरार रहेगी...

हिंदी सिनेमा के इतिहास में कुछ नाम ऐसे दर्ज हैं जिन्हें समय कभी धुंधला नहीं कर पाता। धर्मेंद्र उन्हीं कालजयी कलाकारों में से एक थे–एक ऐसा चेहरा, जिसका आकर्षण पीढ़ियों तक दर्शकों को दीवाना बनाता रहा। 24 नवंबर 2025 को 89 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। उन्होंने सुबह लगभग 10:30 बजे मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में अंतिम सांस ली। कुछ दिनों से वह सांस लेने में तकलीफ से जूझ रहे थे और अस्पताल में भर्ती थे। उनके निधन की खबर के सामने आते ही पूरा बॉलीवुड और देशभर के प्रशंसकों में गहरा शोक छा गया। एक अभिनेता का जाना ही नहीं, बल्कि एक दौर का अंत हो गया।

धर्मेंद्र का जन्म 8 दिसंबर 1935 को पंजाब के लुधियाना जिले के नसराली गांव में हुआ था। किसान परिवार से आने वाला यह लड़का सपनों से भरा था, और जब उसने फिल्मफेयर की 'न्यू टैलेंट हंट' प्रतियोगिता में हिस्सा लिया तो उसे नहीं पता था कि यह कदम उसकी जिंदगी को हमेशा के लिए बदल देगा। 1960 में फिल्म दिल भी तेरा हम भी तेरे से उन्होंने अपने फिल्मी सफर की शुरुआत की। शुरुआत में संकोच भरी मुस्कान और मासूम छवि के साथ उनकी पहचान बनी, पर जल्द ही उन्होंने खुद को 'ही-मैन' के रूप में स्थापित कर लिया। धर्मेंद्र की लोकप्रियता का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि 60 से 80 के दशक तक वह लगातार हिंदी सिनेमा के शीर्ष अभिनेताओं में शुमार रहे।

उनकी फिल्मों में एक अनोखा जादू था, जिसमें एक सच्चा देसीपन, सहज अभिनय और दर्शकों से सीधा जुड़ाव दिखाई देता था। शोले जैसी कालजयी फिल्म में उनके द्वारा निभाया गया 'वीरू' का किरदार आज भी भारतीय सिनेमा की सबसे यादगार भूमिकाओं में गिना जाता है। बसंती, इन कुत्तों के सामने मत नाचना जैसे डायलॉग भारतीय पॉप कल्चर में हमेशा के लिए अमर हो गए। इसके अलावा चुपके चुपके में उनकी हास्य प्रतिभा, अनुपमा में गंभीर और संवेदनशील अभिनय, सीता और गीता, जुगनू, यादों की बारात, धरम वीर और कटी पतंग जैसी फिल्मों ने उन्हें एक बहुमुखी अभिनेता के रूप में स्थापित किया।

धर्मेंद्र केवल ऑन-स्क्रीन हीरो नहीं थे, बल्कि ऑफ-स्क्रीन भी अपनी सादगी, विनम्रता और लोगों के प्रति प्रेम के लिए पहचाने जाते थे। वह कहते थे, मैं अभिनय नहीं करता, मैं बस दिल से जीता हूं। शायद यही कारण था कि लोग उन्हें केवल एक स्टार नहीं, बल्कि अपने परिवार के सदस्य जैसा मानते थे। उनके साथी कलाकार अक्सर बताते थे कि धर्मेंद्र सेट पर सबसे पहले आने वाले और सबसे आखिरी जाने वाले अभिनेताओं में से थे। निर्माता-निर्देशक रमेश सिप्पी ने एक बार कहा था, धर्मेंद्र के भीतर एक अजीब-सी सच्चाई थी, जो कैमरे पर जादू बनकर उभरती थी।

उनकी निजी जिंदगी भी उतनी ही चर्चित रही। पहली पत्नी प्रकाश कौर से उनके चार बच्चे—अजय सिंह देओल (सनी देओल), विजय सिंह देओल (बॉबी देओल), विजेता और अजीता—जबकि अभिनेत्री हेमा मालिनी से उनकी दो बेटियाँ—ईशा और अहाना देओल—हैं। धर्मेंद्र और हेमा मालिनी की जोड़ी हिंदी फिल्मों में जितनी लोकप्रिय रही, उतना ही लोगों के दिलों में भी छाई रही। दोनों ने मिलकर कई सुपरहिट फिल्मों में काम किया, जिनमें सीता और गीता और शोले प्रमुख हैं।

बढ़ती उम्र के बावजूद धर्मेंद्र ने फिल्मों से दूरी नहीं बनाई। उनका मानना था कि फिल्में मेरी सांस हैं, इन्हें छोड़ दूंगा तो जी नहीं पाऊंगा। 2023 में वे रॉकी और रानी की प्रेम कहानी में नजर आए, और उनकी स्क्रीन पर मौजूदगी ने दर्शकों को एक बार फिर पुरानी यादों में लौटा दिया। उम्र के साथ उनकी चाल भले धीमी पड़ गई हो, लेकिन उनके चेहरे की चमक, मुस्कान और दिलकश अंदाज़ में कभी कमी नहीं आई।

24 नवंबर 2025 को जब उनके निधन की खबर सामने आई, तो सोशल मीडिया से लेकर फिल्म इंडस्ट्री तक हर जगह शोक संदेशों की बाढ़ आ गई। अमिताभ बच्चन ने लिखा, धर्मेंद्र केवल मेरे दोस्त नहीं

थे, वह मेरे लिए परिवार की तरह थे। हेमा मालिनी ने भावुक होते हुए कहा, वह चले नहीं गए, वह मेरे दिल में हमेशा मौजूद रहेंगे। अभिनेता सनी देओल ने मीडिया से बात करते हुए कहा, पापा ने हमें सिखाया कि इंसान पहले अच्छा बनो, कलाकार बाद में।

धर्मेंद्र का जाना सिर्फ एक अभिनेता का जाना नहीं है, बल्कि वह संवेदनशीलता, सरलता और प्रेम का जाना है जो उनकी आंखों से झलकता था। उन्होंने साबित किया कि स्टारडम चमकदार रोशनी से नहीं, बल्कि इंसानियत और मेहनत से बनता है। हिंदी सिनेमा उनके योगदान को कभी भुला नहीं सकेगा। उन्होंने अपनी फिल्मों और किरदारों के जरिए जो भावनाएं दर्शकों तक पहुंचाईं, वे आने वाली कई पीढ़ियों के दिलों में बनी रहेंगी।

धर्मेंद्र भले ही इस दुनिया से विदा हो गए हों, लेकिन उनकी मौजूदगी हमेशा भारतीय सिनेमा के सुनहरे पन्नों में जिंदा रहेगी। उनके निभाए किरदार, उनका जुनून, उनका अंदाज़ और उनकी सादगी—सब कुछ लोगों की यादों में अमर है। सच यही है कि सितारे कभी मरते नहीं, वे बस आसमान में अपनी नई जगह बना लेते हैंज् और धर्मेंद्र उसी आसमान के सबसे चमकदार सितारों में से एक हैं।

T20 Men's World Cup 2026- अहमदाबाद-कोलकाता में होंगे सेमीफाइनल, फाइनल कहां होगा ये अब भी सस्पेंस

T20 Men's World Cup 2026- टी20 वर्ल्ड कप 2026 के सेमीफाइनल भारत के अहमदाबाद और कोलकाता में खेले जाएंगे, जबकि फाइनल का वेन्यू अभी तय नहीं हुआ है। अगर पाकिस्तान फाइनल में पहुंचता है तो मुकाबला कोलंबो में होगा। टूर्नामेंट भारत और श्रीलंका मिलकर फरवरी-मार्च 2026 में आयोजित करेंगे।

T20 Men's World Cup 2026-अगले साल फरवरी-मार्च में होने वाले टी20 वर्ल्ड कप 2026 की तैयारियां जोरों पर हैं। इस बार टूर्नामेंट की मेजबानी भारत और श्रीलंका मिलकर करेंगे।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड और श्रीलंका क्रिकेट (SLC) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित होने वाले विश्व कप के लिए अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (ICC) ने आठ स्थलों पर अपनी मुहर लगा दी है। इनमें भारत के पांच और श्रीलंका के तीन शहर शामिल हैं।

सेमीफाइनल के लिए चुने गए दो बड़े मैदान

ICC ने जानकारी दी है कि सेमीफाइनल मुकाबले अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम और कोलकाता के ईडन गार्डन्स में खेले जाएंगे। भारत के पांच शहरों अहमदाबाद, कोलकाता, मुंबई, दिल्ली, चेन्नई और श्रीलंका के तीन स्थानों- कोलंबो में दो स्टेडियम और कैंडी में एक स्टेडियम को अंतिम रूप दे दिया गया है। हालांकि फाइनल मैच का स्थान अभी तय नहीं किया गया है। ये फैसला इस बात पर निर्भर करेगा कि कौन-सी टीमें अंतिम मुकाबले तक पहुंचती हैं।

पाकिस्तान की एंट्री से बदल सकता है प्लान

अगर पाकिस्तान या श्रीलंका सेमीफाइनल में जगह बनाते हैं, तो वो मैच कोलंबो में आयोजित किया जाएगा। वहीं अगर ये दोनों टीमें टॉप-4 में नहीं पहुंचतीं, तो दोनों सेमीफाइनल भारत में होंगे। अगर पाकिस्तान फाइनल में पहुंचता है, तो फाइनल मुकाबला निश्चित रूप से कोलंबो में खेला जाएगा। यानी इस बार वर्ल्ड कप में मैच शेड्यूल पाकिस्तान की एंट्री पर भी निर्भर करेगा।

कौन-कौन टीमें खेलेंगी वर्ल्ड कप 2026

17 अक्टूबर को जारी आईसीसी की एक विज्ञप्ति के अनुसार, वर्ल्ड कप में 20 टीमें खेलेंगी। ये फॉर्मेट लगभग वेस्टइंडीज और अमेरिका में हुए 2024 टी20 वर्ल्ड कप जैसा होगा। टीमें चार ग्रुप में बंटी होंगी, हर ग्रुप में पांच-पांच टीमें होंगी। हर ग्रुप से टॉप दो टीमें सुपर-8 में पहुंचेंगी। सुपर-8 में भी दो ग्रुप बनेंगे और वहां से टॉप दो-दो टीमें सेमीफाइनल में जगह बनाएंगी।

Baldeo Furnitech
Pvt. Ltd
Furniture
that Feels Like
Home
+91-7597333333
baldeo_furnitech
BALDEO FURNITECH,
BESIDE SAHANI PARK,
RING ROAD NO.1, RAIPUR

छत्तीसगढ़ संवाद आर.ओ.-13558/283

200 यूनिट तक बिजली पर बिल हाफ

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

प्रदेश के 42 लाख उपभोक्ताओं को लाभ

- घरेलू उपभोक्ताओं को 200 यूनिट तक विद्युत खपत पर 200 यूनिट तक हाफ बिजली का पूरा लाभ
- 200 से 400 यूनिट तक बिजली खपत पर अगले 1 वर्ष तक 200 यूनिट तक हॉफ बिजली बिल का लाभ

क्षमता	सब्सिडी केन्द्र+ राज्य सरकार
1 किलोवॉट	30+15 = 45 हजार
2 किलोवॉट	60+30 = 90 हजार
3 किलोवॉट	78+30 = 1 लाख 8 हजार

प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना

- **मुफ़्त बिजली:** 3 किलोवाट क्षमता वाला रूफटॉप सोलर सिस्टम लगाने पर, प्रति माह 360 यूनिट तक बिजली उत्पादन
- **अतिरिक्त बचत:** 3 किलोवाट के सोलर सिस्टम से ₹26,000 प्रति वर्ष तक बचत
- **सब्सिडी लाभ:** केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संयुक्त रूप से 1 किलोवॉट क्षमता के सोलर प्लांट स्थापना पर 45,000, 2 किलोवॉट पर 90,000 रुपए और 3 किलोवॉट के सोलर प्लांट की स्थापना पर अधिकतम 1,08000 रुपए की सब्सिडी
- **लोन सुविधा:** सोलर प्लांट की स्थापना पर बैंकों द्वारा 6% ब्याज दर पर ऋण
- **अतिरिक्त आय:** उत्पन्न अधिशेष बिजली को ग्रिड को बेचकर अतिरिक्त आय

QR स्कैन करें

सुशासन से समृद्धि की ओर

Visit us : ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in